₹ 10
www.kewalsachtimes.com
अप्रैल 2024

KEWAL SACH TIMES

A National Magazine

RNI NO.-BIHBIL/2011/49252, DAVP NO.-131729, POSTAL REG. NO.:-PS.-78

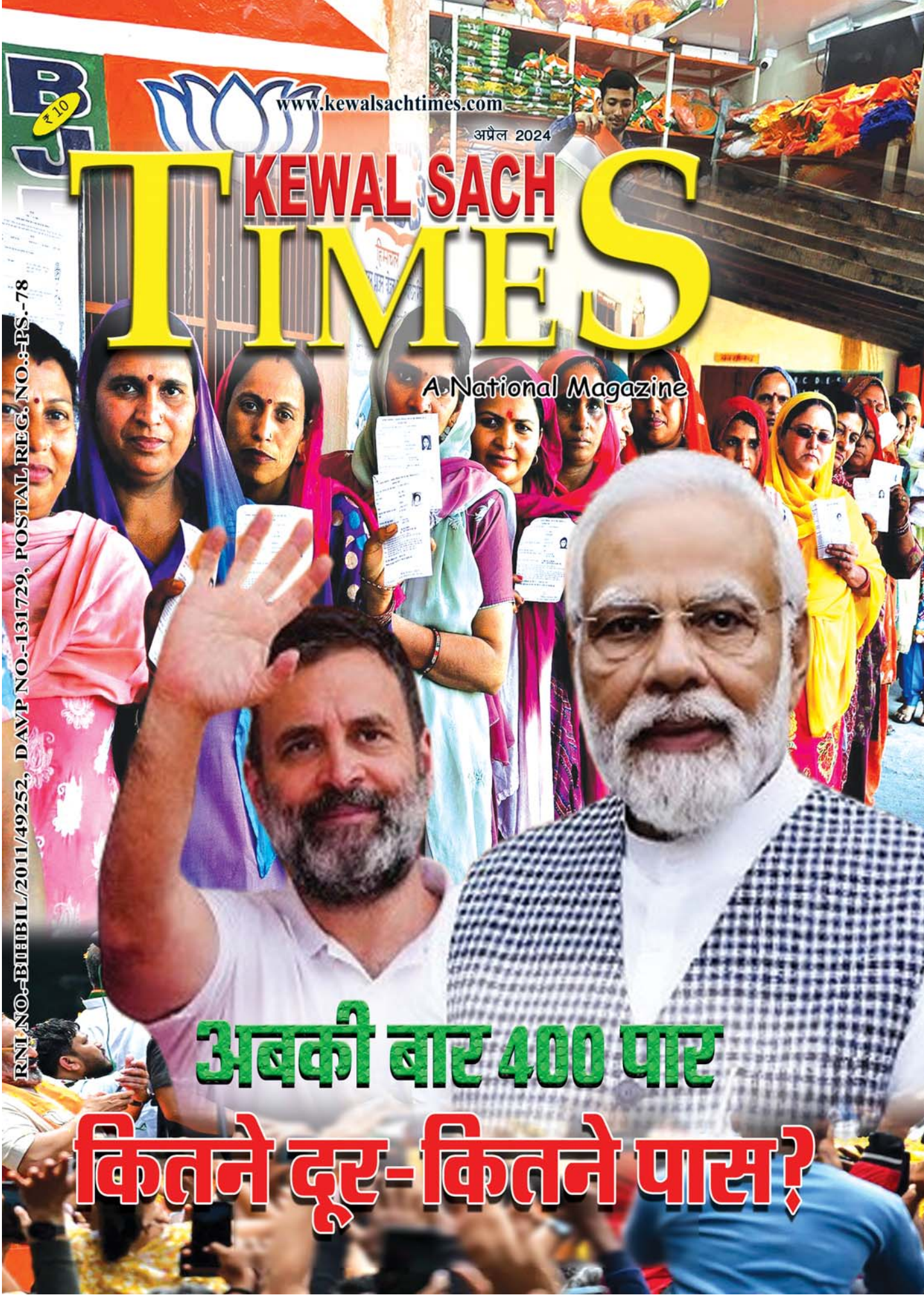

अबकी बार 400 पार
कितने दूर-कितने पास?

जन-जन की आवाज है केवल सच

केवल सच
हिन्दी मासिक पत्रिका

Kewalachlive.in
वेब पोर्टल न्यूज
24 घंटे आपके साथ

Kewalsach news
Kewalsach news
Mob.: 9431073769, 9308815605
खबर वहीं, जो केवल सच हो

केवल सच TIMES

आत्म-निर्भर बनने वाले युवाओं को सपोर्ट करें

आपका छोटा सहयोग, हमें मजबूती प्रदान करेगा

BHIM UPI
G Pay पे Paytm

www.kewalsach.com
www.kewalsachlive.in

-: सम्पर्क करें :-

पूर्वी अशोक नगर, रोड नं.-14, मकान संख्या-28/14,
कंकड़बाग, पटना (बिहार)-800020, मो०:-9431073769, 9308815605

जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएँ

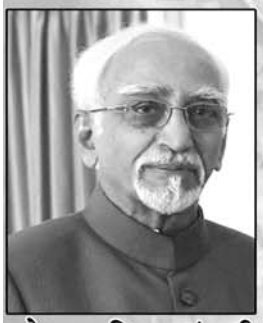

मो० हामिद अंसारी
01 अप्रैल 1937

अजय देवगन
02 अप्रैल 1969

प्रभु देवा
03 अप्रैल 1973

जया प्रदा
03 अप्रैल 1962

जितेन्द्र
07 अप्रैल 1942

रामगोपाल वर्मा
07 अप्रैल 1962

अल्लु अर्जुन
08 अप्रैल 1983

जया बच्चन
09 अप्रैल 1948

जयराम रमेश
09 अप्रैल 1954

मणिशंकर अय्यर
10 अप्रैल 1941

टैरेंस लेविस
10 अप्रैल 1975

स्व० सतीश कौशिक
13 अप्रैल 1956

मुकेश अंबानी
14 अप्रैल 1957

मंदिरा बेदी
15 अप्रैल 1972

लारा दत्ता
16 अप्रैल 1978

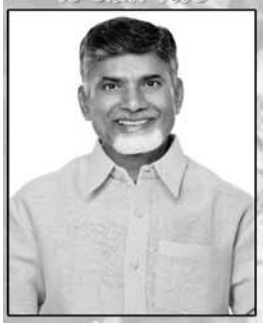

एन. चंद्रबाबू नायडू
20 अप्रैल 1950

चेतन भगत
22 अप्रैल 1974

मनोज बाजपेयी
23 अप्रैल 1969

सचिन तेन्दुलकर
24 अप्रैल 1973

आशिष नेहरा
29 अप्रैल 1979

KEWAL SACH TIMES

A National Magazine

Regd. Office :-
East Ashok, Nagar, House No.-28/14, Road No.-14, kankarbagh, Patna- 8000 20 (Bihar) Mob.-09431073769,
E-mail :- kewalsach@gmail.com

Corporate Office:-
Vaishnavi Enclave, Second Floor, Flat No. 2B, Near-firing range, Bariatu Road, Ranchi- 834001
E-mail :- editor.kstimes@rediffmail.com

Delhi Office :-
Sanjay Kumar Sinha
A-68, 1st Floor, Nageshwar talla, Shastri Nagar, New Delhi-110052
Mob.- 09868700991, 09955077308
kewalsach_times@rediffmail.com

Kolkata Office :-
Ajeet Kumar Dube,
131 Chitranjan Avenue, Near- md. Ali Park, Kolkata- 700073 (West Bengal)
Mob.- 09433567880, 09339740757

ADVERTISEMENT RATES PER ISSUE

COLOUR

AREA	FULL PAGE	HALF PAGE
Cover Page	3,00,000/-	N/A
Back Page	1,00,000/-	65,000/-
Back Inside	90,000/-	50,000/-
Back Inner	80,000/-	50,000/-
Middle	1,40,000/-	N/A
Front Inside	90,000/-	50,000/-
Front Inner	80,000/-	50,000/-

B & W

AREA	FULL PAGE	HALF PAGE
Inner Page	60,000/-	40,000/-

1. एक साल के नियमित विज्ञापन पर पत्रिका के वेवसाइट **www.kewalsachtimes.com** के फ्रंट पर भी विज्ञापन निःशुल्क तथा आपका वेवसाइट से सीधा लिंक हो सकता है।
2. एक साल के नियमित विज्ञापन पर 10 प्रतिशत की रियायत।
3. आपके प्रोडक्ट या संगठन के प्रचार-प्रसार हेतु आलेख को उचित स्थान।
4. पत्रिका द्वारा सामाजिक कार्य में आपके संगठन/प्रोडक्ट का बैनर/फ्लैक्स को उचित स्थान देकर आपके संगठन का व्यापक प्रचार-प्रसार।
5. विज्ञापन का भुगतान चेक या आर.टी.जी.एस. से ही मान्य होगा।

महाप्रबंधक (विज्ञापन)

विश्व में बढ़ता सनातन का प्रभाव

अपनी प्रतिक्रिया हमारे ई-मेल पर दें:- editor.kstimes@rediffmail.com

चार युगों के गौरवशाली इतिहास में भारत भूमि का क्या महत्व एवं प्रभाव रहा है इसका लोहा आज पूरा विश्व मानने लगा है। सत्युग में राजा हरिशचन्द्र की सत्यता, त्रेतायुग में श्रीराम की मर्यादा, द्वापर में श्रीकृष्ण की कर्म प्रधानता एवं धर्म स्थापना तो कलियुग में कथावाचन, धर्म एवं अतिथियों का सत्कार, सनातन संस्कृति का महत्व और मानवता के साथ-साथ मशिनरी युग में भी मानवता का प्राथमिकता ने दुनिया की नजर भारत की ओर खीचा हैं। कलियुग में कई धर्म की स्थापना वाला आर्यावर्त की अवलौकिक इतिहास जिसपर भारत गर्व से सिर उंचा करके सबकी रक्षा करता है। आधुनिक युग में जिस रिसर्च पर विश्व इठलाता है उसका जन्मदाता भी भारत ही रहा है। आज कुछ अविष्कार के जनक कौन है इतिहास के पन्नों में पढ़ाया जाता है लेकिन भारत के ऋषि-मुनियों को ग्रंथों में अध्ययन करने पर आपको ज्ञात होगा कि जिस अविष्कार का समय काल बताया जाता है उससे हजारों वर्ष पूर्व में भारत के महान ऋषि -मुनियों ने कर दिया है लेकिन उसका अभिमान कभी नहीं किया है। आज कोई चिकित्सा पद्धति में सर्जरी करता है तो वह दावा नहीं कर सकता कि मरीज ठीक ही होगा लेकिन महर्षि सुश्रुत ने इस सफल कर दिखाया है। जहां 21वीं सदी में मानव जाति नग्नता की ओर बढ़ रहा है और राक्षसी प्रवृति को बढ़ावा दे रहा है वहीं भारत के कथावाचक, मोटिवेशनल स्पीकर सनातन संस्कृति और सकरात्मक विचारों को विश्व के पटल पर रख रहे हैं। सनातन के गौरवशाली अतित को न सिर्फ भारत बल्कि विश्व के युवा स्वीकार कर रहे हैं मृत्युलोक में भगवान की भक्ति की मोक्ष का सशक्त माध्यम है जिसकी वजह से भारत के बाहर श्रीराम और श्री कृष्ण की कथा का श्रवण हो रहा है।

Hare krishna - Hare ram राम - राम हरे - हरे। भारत देश के विभिन्न राज्यों में निवास करने वाले बच्चे, युवा एवं बुर्जुग सभी के मुख से प्रभु का नाम आ ही जाता है और इस नाम में इतनी शक्ति है की गंभीर से गंभीर समस्या का समाधान मिलता है। वैसे तो विश्व में कई धर्म हैं लेकिन सनातन (हिन्दू) धर्म की विशेषता प्रमाणिक है और उसके अतित भी साक्ष्य प्रस्तुत करता है, जिसकी वजह से सात समुंद्र पार वाले विदेशी भी सनातन धर्म को स्वीकार्य कर रहे हैं। भगवान श्रीराम एवं श्रीकृष्ण की पावन भूमि भारत वर्ष में देवी-देवता भी जन्म लेकर (साथ ही कई धर्म के प्रभु भी अवतरित हुए है भारत भूमि पर) पूरे संसार को दशा एवं दिशा देने का कार्य किया है। सत्य और मानव से जोड़ने का कार्य सनातन संस्कृति अनादि काल से करता आ रहा है और विज्ञान तक को विकसित किया है जिसपर शोद्य हो रहा है। प्रकृति की पूजा भी सनातन संस्कृति का जीता-जागता प्रमाण है जिसको विश्व आज अपनी भाषा में प्रकृति को बचाने का प्रयास कर रहे हैं लेकिन भारतीय संस्कृति में प्रकृति को देवता माना गया है और युगों-युगों से नदी, पहाड़, वृक्ष को सहेजने का काम धर्म से जोड़कर उनका सम्मान किया गया है इसी वजह से कहा गया है **''क्षिति जल पावक गगन समीरा''** भले ही वर्त्तमान समय में इसको कुछ वर्ग पाखंड से जोड़कर गंदी टिप्पणी भी करता है। भारत में सत्ता पाने के लिए भी धर्म का सहारा लेना पड़ता है और यही कारण है की BJP जहां सनातन संस्कृति में विश्वास रखती है और उसको जिवंत रखने के लिए प्रयासरत् है वहीं अन्य राजनीतिक पार्टियां इसको पाखंड मानती है। सनातन भारत की संस्कृति, सभ्यता में अगर भव्यता नहीं रहती तो विश्व के शिक्षित देश भारत के गौरवशाली इतिहास को समझने के लिए यात्रा नहीं करते। वैसे तो सनातन धर्म को खंडित करने का बहुत प्रयास किया गया लेकिन आदि शंकराचार्य एवं अन्य धर्मगुरूओं ने अपना वैदिक इतिहास पर कार्य करते रहे और हजारों वर्ष की गुलामी के जंजीर में बंधने के बावजूद अपने जमीर को जिंदा रखा है। हमारे भारत देश में सिर्फ राम का नाम सत्य है और यह वैसा संविधान है जिसको न बदला जा सकता है और ना ही कोई संसोधन संभव है। महिलाओं को जहां अन्य कई धर्म में सिर्फ हवस पूर्ण करने का माध्यम मानते हैं वहीं सनातन संस्कृति में महिलाओं की उपाधि देवी से जोड़कर उनका सम्मान किया जाता है। सेक्स पूर्ति का माध्यम के बजाय उनके प्रति आस्था-विश्वास-आदर-सम्मान के साथ आधी हिस्सेदारी को तब्बजों दिया जाता है। आधुनिक युगों में बढ़ती आधुनिकता के बाद भी सनातन संस्कृति के प्रति लोगों में वही आस्था आज भी कायम है बल्कि कथावाचकों, धर्मगुरूओं, सकरात्मक विचारकों के द्वारा निरंतर किये जा रहे प्रयास की वजह से कट्टर मुस्लिम देश में भी सनातन धर्म का विजय ध्वज फहरा रहा है। 98 प्रतिशत मुस्लिम आबादी वाला देश इंडोनेशिया में राज घराने के लोग भी पुराने धर्म सनातन में वापसी कर रहे हैं तथा वहां के देश के नोट पर भगवान **श्रीगणेश की प्रतिमा** विराजमान है और तो और वहां के एयरलाइन को **''गरूड़ एयरलाइन''** कहा जाता है। भारत देश ही नहीं बल्कि विश्व का सबसे शक्तिशाली देश अमेरिका भी दिपावली पर्व को राष्ट्रीय स्तर पर दीपोत्सव का पर्व के रूप में मना रहा है और भारत देश की तरह कई देश इस पर्व पर राष्ट्रीय अवकाश भी दे रहे हैं। केवल इंडोनेशिया ही नहीं अपितु जापान, रूस, अमेरिका, ब्रिटेन, कनाडा, जर्मनी फ्रांस जैसे अन्य कई विकसित देश में भी सनातन धर्म को लोग अपना रहे हैं और उसका आकर्षण विश्व के पटल पर पड़ रहा है क्योंकि हिन्दू संस्कृति एवं सनातन वैदिक ज्ञान वैश्विक आधुनिक विद्वान का मूलभूत आधार रहा है। योग विद्या का क्या महत्व है यह भी पूरी दुनिया ने स्वीकार्य किया है जो सनातन धर्म का एक पार्ट है। सूर्य एवं चन्द्रमा के महत्व पर भी आज पूरी दुनिया शोद्य कर रही है। अमेरिका में हिन्दुओं की संख्या में भी तेजी से बढ़ोतरी हो रही है और मंदिरों के निमार्ण भी। वेद - पुराण की कथा सुनने वालों की संख्या भी विदेशों में बढ़ने लगी है और भारतीय परिधान एवं रहन-सहन को प्राथमिकता मिलने लगी है। विश्व के कई बहुचर्चित फेसबुक एवं एप्पल के मालिक सनातन धर्म को स्वीकार्य कर रहे हैं और मुस्लिम समुदाय के लोग भी सनातन में पूर्ण आस्था दिखा रहे हैं और सबसे पुरानी संस्कृति के साथ जुड़े रहने का संकल्प भी ले रहे हैं। 2014 में प्रधानमंत्री बनने के बाद नरेन्द्र दामोदर दास मोदी ने पूरी दुनिया को यह बताया की सनातन धर्म में मानवता को जोड़ने का किस प्रकार प्रयास किया जाता है। धर्म संसद को सबसे बड़ा संसद के रूप में स्वीकार्य किया जाता है। भगवान श्रीराम के प्राण-प्रतिष्ठा में शामिल पूरी दुनिया ने देखा की सनातन धर्म बिना किसी दवाब और सबका कल्याण चाहने वाला धर्म हैं जहां मनुष्य के साथ पशु के प्रति भी वही आदर है। जहां गाय हमारी माता के लिए पूजी जाती है तो कुत्ता भैरव बाबा के रूप में ख्याति पाते हैं और वनस्पति में भी देव मानकर उन्हें पूजन करने की पद्धति है। जिस देश की संस्कृति जितनी समृद्ध होगी उस देश का विकास उतना ही उन्नत होगी और सनातन धर्म में संस्कृति का क्या महत्व है यह पूरी दुनिया देख रही है। कोरोना काल में भारत के योग विद्या एवं वनस्पति विज्ञान का लोहा पूरी दुनिया ने स्वीकार्य किया है। हमारे पर्व एवं त्योहार भी पूर्ण विज्ञान पर आधारित है जिसको शिक्षित एवं विकसित देश को समझ में आने लगा है जिसकी वजह से विश्व में सनातन का प्रभाव स्थापित होने लगा है। जिन विषयों पर आज विश्व सजग हो रहा है भारत उसपर युगों से मार्ग प्रशस्त कर रहा है।

KEWAL SACH TIMES
A National Magazine
वर्षः- 13, अंकः- 154 माहः- अप्रैल 2024 रू. 10/-

Editor
Brajesh Mishra 9431073769
6206889040
8340360961
editor.kstimes@rediffmail.com
kewalsach@gmail.com
kewalsach_times@rediffmail.com

Principal Editor
Arun Kumar Banka 7782053204
Surjit Tiwary 9431222619
Nilendu Kumar Jha 9431810505

General Manager (H.R)
Triloki Nath Prasad 9308815605

General Manager (Advertisement)
Manish Kamaliya 6202340243
Poonam Jaiswal 9430000482

Joint Editor/Lay-out Editor
Amit Kumar 9905244479
amit.kewalsach@gmail.com

Legal Editor
Amitabh Ranjan Mishra 8873004350
S. N. Giri 9308454485

Asst. Editor
Mithilesh Kumar 9934021022
Sashi Ranjan Singh 9431253179
Rajeev Kumar Shukla 7488290565
Kamod Kumar Kanchan 8971844318

Sub. Editor
Arbind Mishra 6204617413
Prasun Pusakar 9430826922
Brajesh Sahay 7488696914

Bureau Chief
Sanket kumar Jha 7762089203
Sagar Kumar 9155378519

Bureau
Sridhar Pandey 9852168763
Sonu Kumar 8002647553

Photographer
Mukesh Kumar 9304377779

प्रदेश प्रभारी

दिल्ली हेड
संजय कुमार सिन्हा 9868700991

झारखण्ड हेड
ब्रजेश मिश्र (2) 7979769647
7654122344

पश्चिम बंगाल हेड
अजीत दुबे 9433567880
9339740757

मध्यप्रदेश हेड
अभिषेक पाठक 8109932505
8269322711

छत्तीसगढ़ हेड
आवश्यकता है

उत्तर प्रदेश हेड
निर्भय कुमार मिश्रा 9452127278

उत्तराखण्ड हेड
आवश्यकता है

महाराष्ट्र हेड
आवश्यकता है

गुजरात हेड
आवश्यकता है

आंध्र प्रदेश हेड
आवश्यकता है

राजस्थान हेड
आवश्यकता है

पंजाब हेड
आवश्यकता है

हरियाणा हेड
आवश्यकता है

राजस्थान हेड
आवश्यकता है

उड़ीसा हेड
आवश्यकता है

आसाम हेड
आवश्यकता है

हिमाचल हेड
आवश्यकता है

दिल्ली कार्यालय
केवल सच टाइम्स,
द्विभाषीय मासिक पत्रिका,
द्वारा- संजय कुमार सिन्हा
A-68, 1st Floor,
नागेश्वर तल्ला, शास्त्रीनगर, न्यू दिल्ली-110052
मो०- 9868700991, 9431073769

पश्चिम बंगाल कार्यालय
केवल सच टाइम्स,
द्विभाषीय मासिक पत्रिका,
द्वारा- अजीत कुमार दुबे
131 चितरंजन एवेन्यू,
कोलकात्ता, पश्चिम बंगाल- 700073
मो०- 9433567880, 9339740757

झारखण्ड कार्यालय
केवल सच टाइम्स,
द्विभाषीय मासिक पत्रिका,
वैष्णवी इंक्लेव, द्वितीय तल,
फ्लैट नं- 2बी
नियर- फायरिंग रेंज
बरियातु रोड, राँची- 834001
मो०- 9308815605

मध्यप्रदेश कार्यालय
केवल सच टाइम्स,
द्विभाषीय मासिक पत्रिका,
द्वारा- अभिषेक कुमार पाठक
हाउस नं.-28, हरसिद्धि कैम्पस
खुशीपुर, चांबड़
भोपाल, मध्य प्रदेश- 462010
मो०- 8109932505,

विशेष प्रतिनिधी
भारती मिश्र 8521308428
बेंकटेश कुमार 8210023343

प्रकाशित आलेख पर आप अपना सुझाव एवं प्रतिक्रिया अवश्य दें।

केवल सच टाइम्स

द्विभाषीय मासिक पत्रिका

हमारा पता है

पूर्वी अशोक नगर, रोड नं.-14,

मकान संख्या:- 14/28, कंकड़बाग, पटना-800020 (बिहार)

सम्पर्क करें:- 9431073769, 8340360961

हमारा ई-मेल

editor.kstimes@rediffmail.com

kewalsach_times@rediffmail.com

मार्च 2024

पहचान

मिश्रा जी,

''खैरैना वो गाव जिसने अमेठी को अंतराष्ट्रीय पहचान दिलाई'' खबर में समीरात्मज मिश्र ने गांव की पूरी कहानी को कलमबद्ध किया है कि किस प्रकार खैरैना गांव ने अपने श्रम-परिश्रम से अपनी पहचान अंतर्राष्ट्रीय पटल पर बनायी है। इस प्रकार की खबर से जनता का विश्वास मीडिया के प्रति बढ़ता है तथा उसके प्रयास को बल मिलता है। अच्छे कार्य की चर्चा होने से काम करने की क्षमता भी बढ़ जाती है। इस अंक में सुप्रीम कोर्ट के चीफ जस्टिश धनंजय यशवंत चंद्रचूड के विषय में यह जानकारी की वह आयुर्वेदिक भोजन करते हैं की बहुत सुकूनदायक है। सही खबर है।

● **मोहन यादव, चंदौली बजार, चंदौल, यूपी**

आम चुनाव

संपादक महोदय,

''**आम चुनाव कितने खास**'' खबर में पत्रकार अमित कुमार लोकसभा चुनाव 2024 पर बहुत ही धारदार खबर पाठकों के बीच रखा है ताकि आप वोट डालने से पहले एक बार अवश्य विचार करें कि किसको वोट करने से देशहित संभव है। इस अंक में सभी खबरें एक से बढ़कर एक है। सीजेआई की कहानी एवं खैरैना गांव की पहचान की खबर भी सकरात्मक पत्रकारिता का परिचय देता है। कानूनी सलाह भी फरवरी 2024 अंक का जानकारीप्रद लगा। राघवेन्द्र राव एवं शदाब नजमी की फ्यूचर गेमिंग की खबर भी काफी गंभीरता से लिखा गया है जो लोगों को जागयक करेगा।

● **अभिषेक राय, बाबू बाजार, कोलकाता प० बं०**

व्यापार बन गया

संपादक महोदय,

आपकी लेखनी में आम आदमी का दर्द समाहित रहता है और वह खुद को उसमें महसूस करता है। मार्च 2024 अंक के संपादकीय ''**व्यापार बन गया चिकित्सा सेवा**'' में आपने भारत के समस्त शहरों की समस्या को हू ब हू लिखा है। आज चिकित्सा सेवा कसाई की तरह धन उगाही के लिए मरीज को जानवरों जैसा व्यवहार करते हैं। भगवान का दूसरा स्वरूप के रूप में स्थान रखने वाले चिकित्सक मानवीय मूल्यों से ज्यादा अत्यधिक धन को महत्व दे रहे हैं। मरीज अब एक प्रोडक्ट बन चुका है जिसकी मॉकेटिंग हो रही है। बीमार को ठीक करने की प्राथमिकता से अधिक उसके परिजनों को कैसे ठगा जाये उसपर काम हो रहा है। सटीक खबर।

● **महेन्द्र पाठक, राजा बाजार, पटना**

आबकारी घोटाले

संपादक महोदय,

पत्रकार अमित कुमार ने दिल्ली के मुख्यमंत्री अरबिन्द केजरीवाल की राजनीति एवं भ्रष्टाचार पर बहुत ही जानकारीप्रद खबर ''**अरबिंद केजरीवाल आबकारी घोटाले का सरगना एवं षडयंत्रकारी!**'' को पाठकों के बीच रखा है जो पठनीय और सोचने पर विवश करता है। मैं केवल सच टाइम्स, पत्रिका का नियमित पाठक हूं और सभी खबरों को पढ़ता हूं। मार्च 2024 अंक में पत्रकार अमित कुमार का लेख काफी शानदार एवं दमदार है। शराब घोटाले में आप की सरकार के मंत्री, सांसद और मुख्यमंत्री तक जेल में चला जाये यह वासतव में सोचनीय बात है। दिल्ली की खबर लोकसभा चुनाव 2024 में वोटरों को काफी प्रभावित करेगा। सटीक व्याख्या के साथ लिखा गया खबर।

● **गोपाल महतो, सेक्टर-24, द्वारका, नई दिल्ली**

पारस को किनारा

मिश्रा जी,

राजनीति पर खबर हो और बिहार का नाम नहीं हो ऐसा हो ही नहीं सकता। केवल सच टाइम्स पत्रिका के मार्च 2024 अंक में चंदन कुमार जजवाड़े ''**बिहार में बीजेपी ने पशुपति पारस को किनारे कर चिराग पासवान को क्यों चुना?**'' ने बिहार में लोकसभा चुनाव 2024 में इसके लाभ-हानि का सटीक आंकलन करते हुए खबर लिखा है कि किन कारणों की वजह से चिराग की आवश्यकता थी। भाजपा को यह ज्ञात है कि चिराग के पास वोट है और पशुपति पारस सिर्फ नाम की राजनेता हैं इस वजह से एनडीए ने पशपुति को किनारा कर चिराग को महत्व देकर अपनी जीत को सुनिश्चित किया है।

●**धर्मेन्द्र पासवान, हनुमान नगर, कंकड़बाग, पटना**

दुमका लोकसभा

ब्रजेश जी,

केवल सच टाइम्स पत्रिका के मार्च 2024 अंक में प्रकाशित रवि प्रकाश की खबर ''**सीता सोरेन बीजेपी को क्या जिता पाएंगी दुमका लोकसभा सीट?**'' में मुख्यमंत्री रहे हेमंत सोरेन के परिवार के सदस्य को चुनावी मैदान में उतारकर भाजपा ने राजनीति की संकट पैदा कर दी है। सीता सोरेन झारखंड की राजनीति में झामुमो के लिए काफी चुनौतीपुण बनती जा रही है और अगर यह सीट सीता सोरेन जीत जाती हैं तो झारखंड में झामुमो के लिए नासूर बन जायेंगी। अमित शाह की कूटनीति झारखंड की राजनीति में भूचाल ला सकती है जिसकी वजह से भाजपा को लाभ होगा। केवल सच टाइम्स ने राजनीति पर झारखंड की खबर को महत्व दिया।

● **मनीष मंडल, एलआईसी कॉलोनी, दुमका**

अन्दर के पन्नों में

22

27

29

39

श्री चन्द्र प्रकाश सिंह

प्रधान संरक्षक सह प्रबंध संपादक
'केवल सच' पत्रिका **एवं 'केवल सच टाइम्स'**
राष्ट्रीय संगठन मंत्री, राष्ट्रीय मजदूर कांग्रेस (इंटक)
पूर्व निदेशक सदस्य, ओरियेंटल बैंक ऑफ कॉमर्स
09431016951, 09334110654

डॉ. सुनील कुमार

शिशु रोग विशेषज्ञ सह मुख्य संरक्षक
'केवल सच' पत्रिका
एवं 'केवल सच टाइम्स'
एन.सी.- 115, एसबीआई ऑफिसर्स कॉलोनी,
लोहिया नगर, कंकड़बाग, पटना- 800020
फोन- 0612/3504251

श्री सज्जन कुमार सुरेका

मुख्य संरक्षक
'केवल सच' पत्रिका **एवं 'केवल सच टाइम्स'**
डी- 402 राजेन्द्र विहार, फॉरेस्ट पार्क
भुवनेश्वर- 751009 मो-09437029875

सुधीर कुमार

मुख्य संरक्षक सह निदेशक **''मगध इंटरनेशनल स्कूल''** टेकारी
'' केवल सच '' पत्रिका **एवं '' केवल सच टाइम्स ''**
9060148110
sudhir4s14@gmail.com

कैलाश कुमार मौर्य

मुख्य संरक्षक
'केवल सच' पत्रिका **एवं 'केवल सच टाइम्स'**
व्यवसायी
पटना, बिहार
7360955555

एक नजर

संपादकीय व प्रधान कार्यालयः-

- पूर्वी अशोक नगर, रोड नं:-14, मकान संख्या:- 28/14, कंकड़बाग, पटना-800020 (बिहार)
  e-mail:- kewalsach@gmail.com,
  editor.kstimes@rediffmail.com
  kewalsach_times@rediffmail.com
- स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक ब्रजेश मिश्र द्वारा जय हिन्द प्रेस कंकड़बाग पटना-800020 से मुद्रित एवं पूर्वी अशोक नगर, रोड नं. 14, कंकड़बाग पटना-800020 से प्रकाशित, संपादक- ब्रजेश मिश्र। **RNI NO.- BIHBIL/2011/49252**
- पत्रिका में प्रकाशित समाचारों से संपादक की सहमति आवश्यक नहीं है।
- सभी प्रकार के वाद - विवादों का निपटारा पटना न्यायालय के अधीन होगा।
- आलेख पर किसी को कोई आपत्ति हो तो एक महीने के भीतर खंडन करें।
- किसी भी लेख के लिए रचनाकार/लेखक स्वयं जिम्मेवार होंगे।
- सभी पद अवैतनिक हैं।
- विज्ञापन की सत्यता की जाँच आप अपने स्तर पर कर लें।
- फोटो-समाचार साभार भी (माध्यम- इंटरनेट एवं अन्य स्त्रोत)
- कोई भी शिकायत हमारे पते पर लिखकर भेजें।
- **विज्ञापन का भुगतान चेक या ड्राफ्ट एवं RTGS से ही मान्य होगा।**
- भुगतान BRAJESH MISHRA को ही करें। किसी प्रतिनिधि को नगद न दें।

A/C No.	:-	20001817444
BANK	:-	State Bank Of India
IFSC Code	:-	SBIN0003564
PAN No.	:-	AKKPM4905A

Contributions/Donations are Invited for the Welfare of Elders/Sr. Citizens for the establishment of
"APNA GHAR" A home for Sr. Citizens of Bihar & Jharkhand Proposed to be Constructed
Under the ageas of " KEWAL SACH SAMAJIK SANSTHAN".
KEWAL SACH SAMAJIK SANSTHAN
Registered Under the Indian Society Act 21, 1880
East Ashok Nagar, Road No.-14,
Kankarbagh, Patna - 800020
Contact No. :- 09431073769, 9955077308, 9308727077
E-mail :- kewalsachsamajiksansthan33@gmail.com
Reg. No. : 1141 (2009-10), Income Tax No. :12AA/2505-8 | 80 जी (5)/तक०/2013-14/1060-63
APNA GHAR
Now in the State of Bihar & Jharkhand
Help the helpless Elders/Sr. Citizen. For which your
Contribution and Donation are essential.
Your Coopertation in this direction can make a diffrence
in the lives of many Sr. Citizens.
KEWAL SACH SAMAJIK SANSTHAN
A/C No. - 0600010202404
Bank Name - United Bank of India
IFSC Code - UTBIOKKB463
Pan No. - AAAAK9339D

21 राज्यों की 102 लोकसभा सीटों के लिए मतदान हुआ संपन्न

● अमित कुमार

लोकसभा चुनाव के पहले चरण में 21 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों की 102 सीटों पर 19 अप्रैल को रात 9 बजे तक करीब 62 प्रतिशत मतदान दर्ज किया गया। इस आंकड़े में थोड़ा-बहुत बदलाव भी हो सकता है। सर्वाधिक 80 प्रतिशत मतदान त्रिपुरा में दर्ज किया गया है। इस दौरान पश्चिम बंगाल में हिंसा की कुछ छिटपुट घटनाएं सामने आईं, वहीं छत्तीसगढ़ में एक ग्रेनेड लांचर के गोले में दुर्घटनावश विस्फोट होने से सीआरपीएफ के एक जवान की मौत हो गई। निर्वाचन आयोग के एक प्रवक्ता ने कहा कि मतदान का आंकड़ा अभी केवल अनुमान आधारित है और मतदान शांतिपूर्ण एवं निर्बाध तरीके से हुआ। लोकसभा चुनाव के साथ 19 अप्रैल को अरुणाचल प्रदेश और सिक्किम में विधानसभा चुनाव के लिए भी मतदान किया जा रहा है। विभिन्न मतदान केंद्रों पर पहली बार मतदान करने वालों में विवाह परिधान में आए कई नवविवाहित जोड़े, दिव्यांग लोग और स्ट्रेचर तथा व्हीलचेयर पर आए कुछ बुजुर्ग शामिल थे। तमिलनाडु, अरुणाचल प्रदेश, अंडमान निकोबार द्वीपसमूह और असम में कुछ बूथ पर इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन (ईवीएम) में मामूली खामियों की शिकायत आई। 7 चरणों में होने वाले लोकसभा चुनाव के सबसे बड़े चरण में मतदान सुबह सात बजे आरंभ हुआ और शाम छह बजे तक जारी रहा। वही निर्वाचन अधिकारियों ने बताया कि पश्चिम बंगाल में 77.57 प्रतिशत मतदान हुआ। असम में 72.10 और मेघालय में 74.21 प्रतिशत मतदान हुआ, वहीं पूर्वी नगालैंड के छह जिलों में अलग राज्य की मांग को लेकर आदिवासी संगठनों के एक संघ द्वारा अनिश्चितकालीन बंद के आह्वान के कारण लोग घरों में ही रहे। पश्चिम बंगाल में कूचबिहार सीट पर हिंसा के कारण मतदान प्रभावित हुआ। तृणमूल कांग्रेस और भाजपा के सूत्रों ने बताया कि दोनों दलों के कार्यकर्ताओं ने मतदान के पहले कुछ घंटों में चुनावी हिंसा, मतदाताओं को धमकाने और चुनाव एजेंटों पर हमलों संबंधी क्रमशः 80 तथा 39 शिकायतें दर्ज कराई हैं। वही हिंसा प्रभावित मणिपुर में शाम पांच बजे तक करीब 69.13 प्रतिशत मतदान दर्ज किया गया। इधर मणिपुर लोकसभा सीट के तहत आने वाले थोंगजु विधानसभा क्षेत्र में स्थानीयों और अज्ञात व्यक्तियों के बीच वाद-विवाद हो गया। मणिपुर में

कुछ स्थानों पर ईवीएम को नुकसान पहुंचाए जाने की भी खबरें आईं। बता दें कि छत्तीसगढ़ में लोकसभा चुनाव के पहले चरण में नक्सल प्रभावित बस्तर लोकसभा सीट पर पांच बजे तक 63.41 फीसदी मतदाताओं ने अपने मताधिकार का उपयोग किया। राज्य के बीजापुर जिले में नक्सलियों द्वारा लगाए गए एक आईईडी में विस्फोट होने से एक अधिकारी घायल हो गया। वही तमिलनाडु में सभी 39 लोकसभा सीटों पर पांच बजे तक 65.19 प्रतिशत से अधिक मतदान दर्ज किया गया है। श्रीपेरुम्बुदूर लोकसभा क्षेत्र के तहत आने वाले तम्बाराम के समीप एक मतदान केंद्र तथा कुछ अन्य मतदान केंद्रों में इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन में तकनीकी खामी के कारण मतदान में करीब एक घंटे की देरी हुई। अरुणाचल प्रदेश में कुल 8,92,694 मतदाताओं में से 67.15 प्रतिशत से अधिक ने अपने मताधिकार का प्रयोग किया। खराब मौसम के कारण सुबह के समय मतदान का प्रतिशत सामान्य था, लेकिन मौसम की स्थिति में सुधार के साथ इसमें तेजी आई। मुख्य निर्वाचन अधिकारी (सीईओ) पवन कुमार साईं ने बताया कि राज्य के कुछ मतदान केंद्रों पर इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीनों (ईवीएम) में तकनीकी खराबी आने के कारण मतदान में देरी हुई, जिन्हें बाद में बदल दिया गया। अंडमान-निकोबार द्वीप समूह की एकमात्र लोकसभा सीट के लिए 5 बजे तक 56.87 प्रतिशत

मतदान दर्ज किया गया। अधिकारियों ने बताया कि ईवीएम संबंधी कुछ छोटी-मोटी गड़बड़ियां थीं, लेकिन उन्हें तुरंत ठीक कर लिया गया। अंडमान निकोबार द्वीपसमूह में पहली बार शोंपेन जनजाति के सात सदस्यों ने केंद्र शासित प्रदेश की एकमात्र लोकसभा सीट के लिए अपने मताधिकार का इस्तेमाल किया। वही असम में भी लखीमपुर के बिहूपुरिया में तीन मतदान केंद्रों, होजेई, कालियाबोर और बोकाखाट में एक-एक मतदान केंद्र और डिब्रूगढ़ के नहारकटिया में एक मतदान केंद्र में ईवीएम में गड़बड़ी दर्ज की गई। बाद में इन खामियों को दूर कर दिया गया। लखीमपुर क्षेत्र में एक वाहन को लेकर जा रही नौका अचानक नदी का जलस्तर बढ़ने के कारण बह गई, जिसके चलते उस वाहन में रखी इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन पानी में आंशिक रूप से डूब गई। एक अधिकारी ने बताया कि वाहन का चालक और उसमें सवार चुनाव अधिकारी वाहन में पानी घुसने से पहले ही उसमें से निकल गए। दूसरी तरफ बिहार की 4 लोकसभा सीटों पर 75 लाख मतदाताओं में से करीब 48.50 प्रतिशत ने शाम पांच बजे तक अपने मताधिकार का प्रयोग किया। जम्मू-कश्मीर के उधमपुर संसदीय क्षेत्र में मूसलाधार बारिश होने के बावजूद 65.08 प्रतिशत से अधिक मतदाताओं ने अपने मताधिकार का उपयोग किया। राजस्थान की 12 लोकसभा सीटों पर मतदान हुआ और शाम पांच बजे तक 56.58 प्रतिशत से अधिक मतदाताओं ने वोट डाले। उत्तराखंड की पांचों लोकसभा सीटों पर पांच बजे तक 54.06 प्रतिशत से अधिक मतदाताओं ने अपने मताधिकार का उपयोग किया। महाराष्ट्र की पांच लोकसभा सीटों पर पांच बजे तक 55.35 प्रतिशत जबकि मध्य प्रदेश में छह लोकसभा सीटों पर 64.77 प्रतिशत मतदान दर्ज किया गया। आगे बता दें कि उत्तर प्रदेश में 58.49 प्रतिशत, मिजोरम में 54.33 प्रतिशत, नगालैंड में 56.91 प्रतिशत, पुडुचेरी में 73.50 प्रतिशत और सिक्किम में 69.47 प्रतिशत मतदान दर्ज किया गया। निर्वाचन आयोग ने पहले चरण के मतदान के लिए 1.87 लाख मतदान केंद्रों पर 18 लाख से अधिक मतदान कर्मियों को तैनात किया है। इन मतदान केंद्रों पर 16.63 करोड़ से अधिक मतदाता अपने मताधिकार का उपयोग कर सकेंगे। मतदाताओं में 8.4 करोड़ पुरुष, 8.23 करोड़ महिलाएं हैं और 11,371 लोग तृतीय श्रेणी के हैं। 35.67 लाख लोग पहली बार मतदाता बने हैं। इसके साथ ही 20 से 29 वर्ष के आयु वर्ग के 3.51 करोड़ युवा मतदाता हैं। मतगणना चार जून को होगी। पहले चरण में जिन राज्यों की सभी लोकसभा सीटों पर मतदान हो रहा है उनमें तमिलनाडु (39), उत्तराखंड (5), अरुणाचल प्रदेश (2), मेघालय (2), अंडमान और निकोबार द्वीप समूह (1), मिजोरम (1), नगालैंड (1), पुडुचेरी (1), सिक्किम (1) और लक्षद्वीप (1) शामिल हैं। इसके अलावा राजस्थान में 12, उत्तर प्रदेश में 8, मध्य प्रदेश में 6, असम और महाराष्ट्र में 5-5, बिहार में 4, पश्चिम बंगाल में 3, मणिपुर में 2 और त्रिपुरा, जम्मू

कश्मीर तथा छत्तीसगढ़ में एक-एक सीट पर मतदान हो रहा है। पहले चरण में अरुणाचल प्रदेश में विधानसभा की 60 और सिक्किम की 32 सीट के लिए भी एक साथ मतदान हो रहा है।

करीब 144 करोड़ की आबादी वाले विश्व के सबसे बड़े गणतंत्र भारत में हर 5 साल में एक बार लोकसभा चुनाव होते हैं। भारत का पहला लोकसभा चुनाव जिसे आम चुनाव भी कहते हैं। भारत में पिछले 72 सालों से लोकसभा चुनाव हो रहे हैं। कई सरकारें आईं और सत्ताएं बदलीं। इस बीच देश भी बदला। अब 2024 में 18वीं लोकसभा का चुनाव हो रहा है। कई धर्म, संप्रदाय, भाषाएं और मान्यताओं वाले दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र भारत देश में चुनाव भी लोकतांत्रिक तरीके से होते हैं। जब सत्ताएं बदलती हैं तो सत्ताओं के हिसाब से देश की सूरत और सीरत भी बदलती रही हैं। जाहिर है पिछले 72 साल में देश, काल और परिस्थिति के लिहाज से

लोकसभा चुनाव भी पूरी तरह से बदल गया है। इस बदलाव में राजनीति के तौर तरीकों से लेकर नेता, पार्टियों, चुनावी मुद्दे, चुनाव प्रक्रिया, प्रचार-प्रसार, नियम-कायदे, राजनीतिक विजन, नारे और यहां तक कि मतदाताओं की सोच तक में बदलाव आया है।

गौरतलब है कि अंग्रेजों के खिलाफ आजादी की लड़ाई के लिए बनाई गई देश की सबसे बड़ी और पुरानी राजनीतिक पार्टी कांग्रेस वर्तमान में अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करती नजर आ रही है। वहीं सत्तारूढ़ भाजपा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अगुवाई में कॉर्पोरेट कंपनी की तरह परफॉर्म करती एक सिस्टम की तरह नजर आती है। बीजेपी इस बार आत्मविश्वास से लबरेज है और लोकसभा 2024 में 400 सीटें पार करने का दावा कर रही है। अबकी बार 400 पार के नारे के साथ चुनावी मैदान में उतरी भाजपा के दावे पर विपक्ष ने सवालिया निशाना लगाया था। लोकसभा चुनाव के

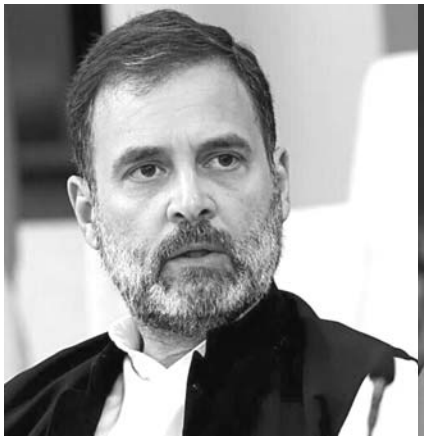

पहले चरण की वोटिंग के ठीक पहले विपक्ष के नेता राहुल गांधी और अखिलेश यादव ने दावा किया कि भाजपा 150 सीटों पर सिमट रही है। विपक्ष के दावे में कितना दम है और क्या वाकई भाजपा लोकसभा चुनाव में अपने गठबंधन सहयोगियों के साथ 400 पार का लक्ष्य हासिल कर सकेगी, यह अब बड़ा सवाल बन गया है। उत्तर भारत में भाजपा की मजबूत पकड़-2019 के लोकसभा चुनाव में भाजपा के नेतृत्व वाले NDA ने 543 में से 350 सीटों पर जीत हासिल की थीं, जिसमें भाजपा ने अकेले 303 सीटें जीती थी। भाजपा की इस प्रचंड जीत में उत्तर भारत के वोटर्स की बड़ी भूमिका थी और भाजपा ने उत्तर भारत में बड़ी जीत हासिल की थी। 2014 को लोकसभा चुनाव के बाद भाजपा उत्तर भारत में लगातार अपनी पकड़ मजबूत करती जा रही है। 2019 के लोकसभा चुनाव में भाजपा ने उत्तर भारत के कई राज्यों में विपक्ष का लगभग सूपड़ा ही साफ कर दिया था। देश के बड़े राज्यों में से एक उत्तर प्रदेश में भाजपा ने 80 लोकसभा सीटों में से 62 सीटों पर जीत हासिल की थी। वहीं पीएम मोदी के गृह राज्य गुजरात में पार्टी को 26 में से 26 लोकसभा सीटों पर जीत मिली थी। वहीं मध्यप्रदेश की 29 लोकसभा सीटों से 28, छत्तीसगढ़ में सभी 11, हरियाणा की सभी 10 सीटें भाजपा ने जीती थी। इस तरह हिमाचल प्रदेश, त्रिपुरा, दिल्ली और उत्तराखंड की भी सारी लोकसभा सीटों पर भाजपा ने 2019 में अपना कब्जा जमाया था। ऐसे में 400 आंकड़ा पार करने के लिए बीजेपी के पास अब दक्षिण के राज्यों की ओर ही जाना होगा। दक्षिण विजय के बिना 400 पार का लक्ष्य अधूरा- 2019 के लोकसभा चुनाव में उत्तर भारत में बड़ी जीत हासिल करने वाली भाजपा को दक्षिण भारत में बड़ी हार का सामना करना पड़ा था। दक्षिण और पूर्वात्तर के 11 ऐसे राज्य थे, जहां भाजपा एक भी सीट नहीं जीत सकी थी। इनमें तमिलनाडु, केरल, पुडुचेरी, नागालैंड, लक्षद्वीप, आंध्र प्रदेश, अंडमान-निकोबार द्वीप समूह, सिक्किम, मेघालय, मिजोरम और दादर एवं नागर हवेली शामिल थे। दक्षिण के 11 राज्यों से 93 लोकसभा सीटें आती है, जिसमें आंध्र प्रदेश (25 सीट), तमिलनाडु (39 सीट), केरल (20 सीट), मेघालय (2 सीट) और मिजोरम, नागालैंड, लक्षद्वीप, सिक्किम, अंडमान- निकोबार द्वीप समूह और दादर एवं नागर हवेली में 1-1 लोकसभा सीट हैं। ऐसे में अगर लोकसभा चुनाव में भाजपा के नेतृत्व वाले NDA को 400 सीटें जीतने का टारगेट पूरा करना है, तो उसे दक्षिण विजय करना जरूरी है। यहीं कारण है कि इस बार भाजपा ने अपना पूरा फोकस दक्षिण के राज्यों पर किया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी दक्षिण भारत से सबसे अधिक लोकसभा सीटों वाले राज्यों आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु और तेलंगाना पर खासा फोकस किया है। पीएम मोदी इन राज्यों में जनवरी से ताबड़तोड बड़े-बड़े कार्यक्रम कर रहे है और चुनाव की तारीखों के एलान के बाद भी पीएम मोदी लगातार दक्षिण के राज्यों में पहुंच रहे है। इसके साथ भाजपा ने इस बार दक्षिण भारत के किला को भेदने के लिए गठबंधन में कई नए और पुराने साथियों को फिर जोड़ा है। इनमें आंध्र प्रदेश में पुराने साथी तेलुगू देशम पार्टी को फिर से अपने साथ जोड़ने के साथ फिल्म कलाकार पवन कल्याण की जनसेना पार्टी को भी गठबंधन मे शामिल किया है। साथ ही तमिलनाडु में अभिनेता आर. शरत कुमार की अकिला इंडिया सामाथुवा मक्कल काची पार्टी और टीटीवी. दिनाकरन की अम्मा मक्कल मुन्नेत्रा काझागम पार्टी से हाथ मिलाया है। इसके अलावा भाजपा ने कर्नाटक में पूर्व प्रधानमंत्री एचडी. देवेगौड़ा की जनता दल(एस) को अपने साथ मिलाया है। ऐसे में जब खुद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृहमंत्री अमित शाह ने दक्षिण भारत की पूरी चुनावी कमान अपने हाथों में ले रखी और भाजपा राममंदिर के साथ-साथ कॉमन सिविल कोड और सीएए के मुद्दें को दक्षिण भारत में अपने चुनाव प्रचार में खूब उछाल रही है तब देखना दिलचस्प होगा कि क्या दक्षिण भारत का वोटर्स भाजपा और NDA के साथ आता है और उसका 400 सीटें जीतने का सपना साकार होता है।

बहरहाल आम चुनावों के बीच केन्द्रीय मंत्री एवं राजकोट लोकसभा सीट से भाजपा उम्मीदवार द्वारा क्षत्रिय समाज के खिलाफ की गई टिप्पणी को लेकर समाज का गुस्सा शांत होने का नाम नहीं ले रहा है। जामनगर के पास आयोजित क्षत्रिय अस्मिता महासम्मेलन में राजपूत समाज के नेताओं ने कहा कि वे किसी भी सूरत में झुकेंगे नहीं। सम्मेलन में समाज के लोगों से आग्रह किया गया कि वे भाजपा के खिलाफ वोट करें। इतना ही नहीं कई स्थानों पर

समाज के धर्म घूम रहे हैं और समाज के लोगों से भाजपा को वोट नहीं देने की अपील कर रहे हैं। क्षत्रिय समाज लोकसभा चुनाव में कितना असर डालेगा यह परिणाम के बाद ही पता चलेगा, लेकिन फिलहाल भाजपा की मुश्किल जरूर बढ़ गई है। रूपाला के बयान से शुरू हुआ क्षत्रिय आंदोलन गुजरात में धीरे-धीरे जोर पकड़ रहा है। जामनगर-राजकोट हाईवे पर खिजड़िया बाइपास के पास आयोजित क्षत्रिय अस्मिता महासम्मेलन में जामनगर सहित पूरे गुजरात से क्षत्रिय समाज के नेता, करणीसेना और बड़ी संख्या में राजपूत समाज के लोग शामिल हुए। राजपूत समाज के लोगों ने आंदोलन को तेज करने के लिए एक कमेटी बनाने का भी फैसला किया है। सम्मेलन में क्षत्रिय समाज के नेताओं ने कहा कि भाजपा को समझाने की कोशिश की थी, लेकिन कोई नतीजा नहीं निकला। अब समाज किसी भी सूरत में झुकने को तैयार नहीं है। राजपूत समाज के भाई-बहन 7 मई को मतदान के दिन जय भवानी के नारे के साथ भाजपा के विरोध में मतदान करेंगे। वही क्रिकेटर रवींद्र जडेजा की बहन नयनाबाहम बीजेपी के खिलाफ वोट करने और करवाने की शपथ लेंगे। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने जाम साहब शत्रुशल्य सिंह से मिलकर अपना कर्तव्य निभाया है और जाम साहब ने भी मोदी के समर्थन में अपील कर अपना कर्तव्य निभाया है। लेकिन, इससे आंदोलन पर कोई फर्क नहीं पड़ेगा। इधर, लोकसभा चुनाव में उम्मीदवारों की घोषणा होने तक 5 लाख की बढ़त की चर्चा जोरों पर थी, लेकिन कुछ ही देर बाद भाजपा की आंतरिक गुटबाजी और रूपाला की टिप्पणी से क्षत्रिय समाज में भड़के विरोध प्रदर्शन ने कई सीटों पर भाजपा की मुश्किल को बढ़ा दिया है। अब भाजपा नेता अपने भाषणों में 5 लाख की लीड की बात नहीं करते। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और केंद्रीय गृहमंत्री अपने विधानसभा में उम्मीदवार को भारी बहुमत से जिताने की बात करते हैं। कुछ दिन पहले साबरकांठा में आयोजित सहकारिता सम्मेलन में पाटिल ने सहकारी क्षेत्र से जुड़े लोगों से कहा था कि इस चुनाव में अगर आपके क्षेत्र में उम्मीदवार 5 लाख की लीड नहीं ले पा रहा है तो आप इसे पूरा करें। भाजपा नेताओं का अब मानना है कि मौजूदा हालात में बीजेपी उम्मीदवारों के लिए बढ़त से ज्यादा अहम जीत हो गई है। कई जगहों पर जाति समीकरण तो कुछ सीटों पर अंदरूनी कलह को लेकर विपरीत स्थिति पैदा हुई है। बताते चले कि कुछ समय पहले बीजेपी के राष्ट्रीय संगठन महासचिव बीएल संतोष गुजरात आए थे। उन्होंने इस बात पर भी असंतोष व्यक्त किया कि कार्यकर्ता यहां विशेष जनसंपर्क नहीं कर सके और घर-घर जाकर प्रत्याशियों का प्रचार नहीं हो सका। उन्होंने यह भी संदेह व्यक्त किया कि यदि चुनाव में हार हुई तो भाजपा के लिए स्थिति गंभीर हो सकती है। वैसे में राज्य की 26 लोकसभा सीटों में से आणंद एकमात्र सीट है, जहां पाटीदार और क्षत्रिय उम्मीदवार के बीच सीधा मुकाबला है। इस सीट पर क्षत्रिय और पाटीदार उम्मीदवारों के बीच 11 बार सीधा मुकाबला हुआ है, जिसमें 6 बार क्षत्रिय और 4 बार पाटीदार उम्मीदवार जीते हैं। एक बार निर्दलीय उम्मीदवार ने यहां से जीत हासिल की है। इस बार क्षत्रिय आंदोलन के बीच समीकरण बदल

गए हैं। कांग्रेस उम्मीदवार अमित चावड़ा इस विवाद का फायदा मिल सकता है। चावड़ा आणंद सीट पर मजबूत उम्मीदवार माने जा रहे हैं। आणंद लोकसभा सीट पर 1957 से 2019 तक हुए 16 चुनावों में कांग्रेस ने 10 बार जीत हासिल की है। गुजरात की 26 में से 26 लोकसभा सीटें जीतने के लिए भाजपा पूरी ताकत लगा रही है। वहीं, कांग्रेस गुजरात में कमबैक करती हुई दिखाई दे रही है। कांग्रेस का 10 सीटें जीतने का दावा भले ही अतिशयोक्ति हो सकता है, लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं की उसकी ताकत में इजाफा हुआ है। आणंद सीट पर क्षत्रिय समाज की नाराजगी की असर देखने को मिल सकता है। आणंद लोकसभा क्षेत्र में अब तक बंटे हुए क्षत्रिय इस चुनाव में एकजुट हो गए हैं। क्षत्रिय आंदोलन प्रभावी हुआ तो इस सीट पर भाजपा को सीधा नुकसान होगा। आणंद लोकसभा सीट पर करीब 60 फीसदी क्षत्रिय मतदाता हैं। इसके बावजूद भाजपा को उम्मीद है कि भाजपा यहां एकतरफा जीत हासिल करेगी।

सनद् रहे कि चुनावों की सबसे अहम बात उनके प्रचार प्रसार के तरीके में आए बदलाव को कहा जा सकता हैं। एक जमाना था कि जब हर गली और मोहल्ले में झंडे, पोस्टर, बैनर और दीवारों पर राजनीतिक नारे छपे नजर आते थे। इतना ही नहीं राजनीतिक रैलियों, वोट के लिए नेताओं के एनाउंसमेंट, घर-घर जाकर वोट मांगना, मतदाताओं के पैर छूना, आशीर्वाद लेना और नेताओं की सभाओं का शोर जमकर सुनाई आता था। चुनाव प्रचार प्रसार की सामग्री के लिए एक एक सीट पर हजारों लोग काम करते थे। झंडे, पोस्टर, बैनर से लेकर लाउडस्पीकर और नारे बनाने वालों के पास काम ही काम था। लेकिन वक्त बदलने के साथ गली-मोहल्ले का सारा चुनावी शोर सोशल मीडिया पर शिफ्ट हो गया है। अब फेसबुक से लेकर एक्स (ट्विटर) और इंस्टाग्राम स `लेकर यूट्यूब पर चुनाव का प्रचार प्रसार होता है।

राजनीतिक पार्टियां अपनी सारी बयानबाजी, एक दूसरे के खिलाफ आरोप- प्रत्यारोप और अपनी पार्टियों की उपलब्धि व अपने खिलाफ उम्मीदवारों की खामियां सिर्फ सोशल मीडिया में पोस्ट, शेयर और वायरल कर रहे हैं। अब सारी चुनावी चर्चाएं भी चाय, सिगरेट के ठियों और कॉफी हाउस से सिमटकर सोशल मीडिया में आ गई हैं। जो भी बहस चर्चा करना है वो इंटरनेट पर सोशल मीडिया के मार्फत हो रही है। और तो और 2024 के लोकसभा चुनाव में तो इस मामले में एक कदम आगे निकलकर अब एआई, डीप फेक और चैट जीपीटी जैसी आधुनिक तकनीक का सहारा लिया जा रहा है। कहना गलत नहीं होगा कि उम्मीदवार के पक्ष और उसके खिलाफ की सारी अवधाराणाएं और नैरेटिव सोशल मीडिया से ही तय हो रहे हैं। देश की तकरीबन सभी राजनीतिक पार्टियों के आईटी सेल हैं। जहां बड़ी संख्या में सोशल मीडिया एक्सपर्ट, रिसर्च करने वाले राजनीतिक विश्लेषक और फैक्ट चैकर्स काम कर रहे हैं। वही चुनावों की रणनीति के लिए आज हर पार्टी के पास उनकी कैंपेन कंपनियां या कैंपेन मैनेजर और चुनावी रणनीतिकार है। पीएम मोदी से लेकर कांग्रेस के राहुल गांधी तक भारतीय और विदेशी कैंपेन मैनेजरों का सहारा लेते हैं। प्रशांत किशोर भारत में एक ऐसा ही नाम हैं, जो चुनावी रणनीतिकार के रूप में उभरकर आये।

बहरहाल, चुनावों में तकनीकी तौर पर इसकी प्रकिया में काफी बदलाव आया है। चुनावी प्रक्रिया में सबसे बड़ा बदलाव 1990 के आखिरी दशक में देखने को मिला। इसमें ही इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन (EVM) की शुरुआत हुई। उससे पहले बैलेट पेपर से वोटिंग होती थी। तब मतपेटियों की लूट से

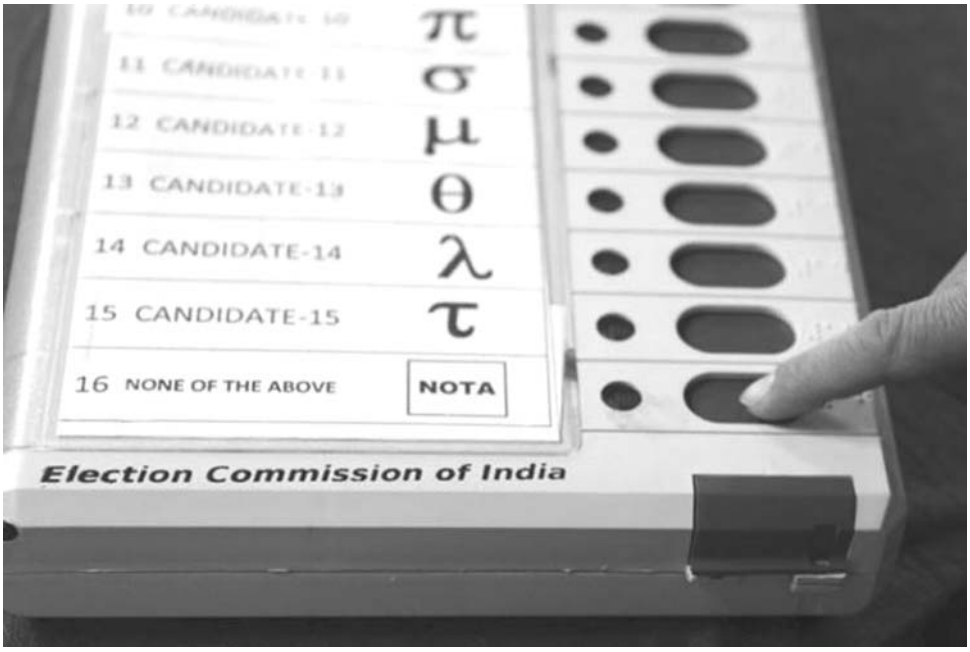

लेकर बूथ कैप्चरिंग के जरिए ठप्पामार वोटिंग तक, हर बार चुनावों में चुनावी प्रक्रिया पर सवाल खड़े करने वाली खबरें सामने आती थी। साल 2004 में पहली बार EVM ने बैलेट पेपर को पूरी तरह से रिप्लेस कर दिया। इसी साल लोकसभा और राज्य विधानसभा चुनावों में पूरी तरह ईवीएम (EVM) मशीन के जरिये वोट डाले गए। ईवीएम के साथ-साथ वोटर-वेरिफाइड पेपर ऑडिट (VVPAT) का साधन भी आया। वीवीपैट से मतदाता को पता चल जाता है कि उसने किस उम्मीदवार को वोट दिया है। इससे ईवीएम हैकिंग जैसी खबरों पर विराम लगा। हालांकि, अब भी कई तरह की धांधलियों की शिकायत चुनाव आयोग को मिलती है और चुनाव आयोग चुनावी प्रक्रिया में सुधार के लिए लगातार प्रयास कर रहा है। वही पहले लोकसभा चुनाव में हर एक उम्मीदवार को मतदान केंद्र पर अपने नाम और चुनाव चिह्न के साथ एक अलग रंगीन मतपेटी दी गई थी। इसका मकसद यह था अनपढ़ लोग भी अपनी पंसद के उम्मीदवार को आसानी से वोट दे सकें। इसके साथ ही भारत निर्वाचन आयोग ने 11 अक्टूबर 2013 से ईवीएम और मतपत्रों में नोटा का विकल्प उपलब्ध कराना शुरू किया था। नोटा का विकल्प मतपत्रों और ईवीएम के अंतिम पैनल में होता है। 2013 में पहली बार नोटा का इस्तेमाल छत्तीसगढ़, मिजोरम, राजस्थान, मध्य प्रदेश और दिल्ली के विधानसभा चुनावों में किया गया था। इसका अर्थ होता है None of the above यानी मतदाता किसी भी उम्मीदवार को वोट नहीं देना चाहता है। सनद् रहे कि 1993 के चुनाव में Voter ID की शुरुआत हुई थी। वोटर आईडी कार्ड मुख्य चुनाव आयुक्त टीएन शेषन के कार्यकाल के दौरान पहली बार 1993 में पेश किया गया था। यह चुनाव में फोटो पहचान पत्र के तौर पर आज भी इस्तेमाल होता है। 1993 के पहले के चुनावों में वोटर आईडी कार्ड नहीं था। वही एक वक्त ऐसा था कि लोगों को मतदान करना नहीं आता था, वोट कैसे डालना है और कहां पर डालना है। इसकी जानकारी लोगों को नहीं हुआ करती थी। इस लिहाज से मतदाताओं को वोट डालना सिखाने के लिए चुनाव आयोग ने चुनावी प्रक्रिया को लेकर एक फिल्म बनाई। इस फिल्म को 3 हजार से ज्यादा सिनेमाघरों में मुफ्त दिखाया जाता था। इसके साथ ही ऑल इंडिया रेडियो पर भी बहुत सारे कार्यक्रम आयोजित किए गए। जिसमें लोगों को चुनाव प्रक्रिया के बारे में चुनाव के बारे में बताया जाता था। अखबारों में भी लेख और विज्ञापनों के माध्यम से लोगों को जागरूक करने का काम किया गया।

अब भारतीय राजनीति के वैसे कुछ महत्वपूर्ण मुद्दों की बात करेंगे जो किसी न किसी चुनाव पर असर डालते आयें है और इनमें गाय एक बेहद संवेदनशील मुद्दा रही है। गाय आज भी गौ माता बनकर राजनीतिक बयानबाजियों का हिस्सा है। राजनीतिक पार्टियों ने इसे जमकर भुनाया है। भारत में चांद, नदी और पेड़ों की तरह गाय की भी पूजा होती है। लेकिन जब से गाय राजनीतिक मुद्दा बनी है, कुछ लोगों के लिए वो आंख की किरकिरी बन गई। दरअसल, राजनीतिक मुद्दों ने भारतीय समाज को बहुत हद तक बदलने की कोशिश की है। कुछ का सोचना है कि गाय की वजह से हिन्दू और मुस्लिम के बीच द्वेष पैदा हुआ। एक तरफ गाय एक वर्ग के लिए गौमाता और श्रद्धा का विषय है तो दूसरी तरफ सिर्फ पशु। दूसरी तरफ कृषि प्रधान देश भारत में गाय और खेती हमेशा से संवेदनशील मुद्दे रहे हैं। खेती के साथ ही गाय का भारत की अर्थव्यवस्था में अहम योगदान रहा है। इसलिए शुरू से ही कृषि और गाय भारत के चुनाव में मुद्दे रहे हैं। कांग्रेस का चुनाव चिन्ह बैल जोड़ी, फिर गाय बछड़ा और बाद में हाथ का पंजा आया। जनता पार्टी का चुनाव चिह्न भी 'हलधर किसान' था। ज्ञात हो कि भारत के चुनावों में विकास भी एक अहम मुद्दा रहा है। विकास के तहत सड़क बनाना, गरीबी हटाना और रोजगार देना शामिल रहा है। आज भी नरेंद्र मोदी की सरकार सबका साथ, सबका विकास का नारा देते हैं। इसके साथ ही भाजपा ने 2004 में अटल बिहारी की सरकार में शाइनिंग इंडिया का नारा दिया था। लेकिन यह पूरी तरह से फेल हो गया और भाजपा पर यह भारी पड़ा। साथ ही साथ भारत की राजनीति और चुनावों में भ्रष्टाचार और घोटालों का शोर कभी कम नहीं हुआ। तकरीबन हर चुनाव में यह मुद्दा उठा। हालांकि हर सरकार में घोटाले हुए और हर पार्टी ने इसे एक दूसरे के खिलाफ मुद्दा बनाया। इनमें बोफर्स घोटाला-64 करोड़, एच.डी. डब्ल्यू सबमरीन-32 करोड़, स्टाक मार्केट घोटाला- 4100

करोड़, एयरबस घोटाला-120 करोड़, चारा घोटाला- 950 करोड़, दूरसंचार घोटाला-1200 करोड़, यूरिया घोटाला-133 करोड़, सी. आर.बी- 1030 करोड़, कोयला घोटाला 11 लाख करोड़, 2जी स्पेक्ट्रम घोटाला-1.76 लाख करोड़, राष्ट्रमंडल खेल घोटाला-70 हजार करोड़, अब्दुल करीम तेलगी घोटाला-20 हजार करोड़, सत्यम घोटाला-14 हजार करोड़ और हवाला कांड-18 मिलियन डॉलर का रिश्वत कांड शामिल है। बोफोर्स घोटाले के आरोपों के चलते 1989 में कांग्रेस सत्ता से बाहर हो गई, जबकि 1984 का चुनाव उसने रिकॉर्ड सीटों के साथ जीता था।

बताते चले कि राजनीति में धर्म का इस्तेमाल इस कदर हुआ है कि अब तिलक लगाना, जनेऊ पहनना या किसी मंदिर में पूजा करने या नहीं करना मुद्दा बन जाता है। धर्म का इतना ज्यादा राजनीतिकरण हुआ है कि इसकी वजह से कई नेताओं को अपने लोगों को रिझाने के लिए आज खुद को हिंदू साबित करना पड़ता है। धर्म अब एक निजी मामला न होकर चुनावी रणनीति का हिस्सा हो गया है। चुनाव आते ही कई पार्टियों के नेता माहौल और रुझान के हिसाब से मंदिरों में माथा टेकते हैं या भगवा धारण करते हैं। कोई वोट बैंक के लिए इफ्तार पार्टी में जाता है तो राजनीतिक विवाद हो जाता है या कोई विवाद पैदा करने

के लिए नवरात्रि में मछली खाने के वीडियो वायरल कर देता है। बता दें कि बिहार के पूर्व उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव के नवरात्रि के दिनों में मछली खाने पर विवाद हो गया। भाजपा ने तेजस्वी पर तंज कसा। लेकिन अब तेजस्वी ने वीडियो जारी कर भाजपा पर तंज कस दिया है। तेजस्वी यादव ने तंज किया है कि भाजपा वालों का आईक्यू चेक करने के लिए ही मैंने मछली खाई थी। दरअसल, मछली खाने के समय को तेजस्वी ने नवरात्रि के पहले का बताया है। उन्होंने कहा कि वीडियो में तारीख लिखी हुई है। भाजपा वाले ये नहीं देखते हैं और कूद जाते हैं। वीडियो में उन्होंने कहा कि हेलीकॉप्टर में मछली खाने वाले अपने वीडियो पर बिहार के पूर्व उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव ने कहा कि हम जानते थे कि भाजपा वाले लोगों को मिर्ची लगेगी इसलिए हमने IQ टेस्ट करने के लिए वो पोस्ट किया। उन्होंने आगे लिखा है कि वीडियो के साथ जो हमने ट्वीट किया है, उसमें साफतौर पर तारीख लिखी हुई है... ये लोग (भाजपा नेता) पढ़ते-लिखते तो हैं नहीं... इतनी प्रमुखता से भाजपा वाले बेरोजगारी पर बोलते हैं क्या? पलायन पर बोलते हैं क्या? गरीबी पर बोलते हैं क्या? लेकिन इन सब चीजों पर कैसे कूद-कूद कर बोल रहे हैं? उन्होंने कहा कि हमने इस वीडियो को बीजेपी और गोदी मीडिया के फॉलोवर्स का टेस्ट लेने के लिए शेयर किया था और हम सही साबित हुए हैं। ट्वीट में वीडियो किस दिन का है इसकी जानकारी भी दी गई है। बता दें कि मछली खाने को लेकर आरजेडी नेता तेजस्वी की ट्रोलिंग उस वक्त शुरू हुई जब उन्होंने बीती रात हेलीकोप्टर में पूर्व मंत्री मुकेश सहनी के साथ खाना खाते हुए एक वीडियो शेयर किया था। अपनी पोस्ट में उन्होंने लिखा कि 'चुनाव की हलचल के बीच हेलिकॉप्टर में खाना! दिनांक- 08/04/2024। तेजस्वी यादव ने वीडियो में बताया है कि हेक्टिक चुनावी कैंपेन के बीच उन्हें खाना खाने के लिए केवल 10 से 15 मिनट का ही समय मिला था, जिसमें फिश और रोटी थी। इस वजह से नवरात्रि के दौरान मांसाहारी खाने को लेकर सोशल मीडिया पर ट्रोलिंग शुरू हो गई।

बहरहाल, लोकसभा चुनाव हो या विधानसभा के चुनाव हर बार राजनीति में कोई न कोई पार्टी धर्म का छौंक डालती है, उसका फायदा उठाने की कोशिश करती है। आज भी लोकसभा चुनावों में धर्म का मुद्दा हावी है। यह भारतीय राजनीति ही है जिसमें हिंदू, मुस्लिम, सिख, इसाई, आपस में हैं भाई-भाई जैसे नारे दिए। जबकि इसके पहले तमाम क्षेत्रीय, भाषाई, वेशभूषा, धार्मिक और सामाजिक विविधताओं वाला यह देश अपनी स्वप्रेरणा से ही मिलजुलकर एकता के साथ रहता आया है। लेकिन राजनीतिक पार्टियों ने फायदा उठाने के लिए इस

विविधता को जो कि एक ताकत भी है, मुद्दा बना दिया। अब आलम है कि धर्म, संप्रदाय तो दूर की बात अब तो जातियों के आधार पर बंटवारे होने लगे हैं। आज जाति के आधार पर नौकरी में आरक्षण के लिए तमाम राज्यों से आंदोलन उठते हैं। यह कहना गलत नहीं होगा कि देश की आजादी के बाद पहले चुनाव से लेकर बाद के कई चुनावों तक भारत में महंगाई और बेरोजगारी मुद्दा रहा है। आज भी देश में कई लोग सोचते हैं कि महंगाई है और बेरोजगारी का ग्राफ भी ऊंचा है, लेकिन नए दौर के चुनावी शोर में कोई इनकी बात करता नजर नहीं आ रहा है। अब चुनावी सभाओं में, राजनीतिक रैलियों में देश में बढती बेरोजगारी और महंगाई की चर्चा नहीं होती। सभी पार्टियों के नेता अब सिर्फ एक दूसरे पर राजनीतिक बयानबाजी और आरोप प्रत्यारोप करते हैं। यानी 2024 के आम चुनाव आते-आते देश के गंभीर और आधारभूत मुद्दे गायब होते जा रहे हैं। एक और अहम बात यह भी है कि चुनावों में राजनीतिक नारों का खासा महत्व है। कई बार तो नारों ने हार-जीत के समीकरण ही बदल दिए। इंदिरा गांधी के जमाने से लेकर नरेंद्र मोदी तक नारों में बहुत बदलाव आया है। इंदिरा गांधी के समय विपक्ष ने नारा दिया था 'इंदिरा हटाओ देश बचाओ'। इसी तरह गरीबी हटाओ, वाह रे नेहरू तेरी मौज, घर में हमला बाहर फौज। कांग्रेस ने राजीव गांधी के समर्थन में नारा दिया था... न जात पर, न पात पर, इंदिरा जी की बात, मुहर लगेगी हाथ पर। जबकि आज मोदी सरकार में 'सबका साथ, सबका विकास' नारा चल रहा है। इसके बाद अबकी बार मोदी सरकार नारा भी हिट हुआ। 2014 लोकसभा चुनावों के दौरान भाजपा ने नरेन्द्र मोदी की लोकप्रियता को ध्यान में रखते हुए 'हर हर मोदी, घर घर मोदी' का नारा दिया था, जिसने देश में मोदी लहर को हवा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। वही इसी साल नरेन्द्र मोदी का दिया अच्छे दिन का नारा भी लोगों की जुबान पर चढ़ा रहा। नारा था 'अच्छे दिन आने वाले हैं'। इसी के बाद भाजपा देश में पूर्ण बहुमत के साथ सरकार बनाने वाली पहली गैर कांग्रेसी पार्टी बनी। वही 2007 में उत्तर प्रदेश में मायावती की बहुजन समाज पार्टी ने 'हाथी नहीं गणेश है, ब्रह्मा, विष्णु, महेश है' के नारे के बलबूते पूर्ण बहुमत से सरकार बनाई थी। उस समय उनकी 'सोशल इंजीनियरिंग' की काफी चर्चा हुई थी। इसके अलावा 2004 में लोकसभा चुनावों के दौरान यूपीए गठबंधन में कांग्रेस का मुख्य नारा था 'कांग्रेस का हाथ, आम आदमी के साथ'। उम्मीद थी कि एनडीए सत्ता में वापसी करेगी, लेकिन इसी नारे के साथ कांग्रेस ने 218 सीटों पर जीत हासिल कर के भाजपा के 'इंडिया शाइनिंग' के नारे को मात दे दी। 1998 में हुए 12वें लोकसभा चुनावों में भाजपा भावनाओं और आस्था से जुड़े मुद्दे पर लड़ी। दो नारे दिए 'राम, रोटी और स्थिरता' और दूसरा नारा था 'सबको देखा बारी-बारी, अबकी बारी अटल बिहारी'। इन नारों का असर यह हुआ कि 12वें चुनावों में भाजपा को कुल 182 सीटों पर जीत मिली। इन तमाम नारों के बीच देश के भीतर के चुनाव ने राजनीतिक दलों पर अपना प्रभाव डाला। अब हालात ऐसे हैं कि अनुमानत: 543 लोकसभा के सीटों का परिसीमन से इनकी संख्या में इजाफा हो सकता है। साल 2026 में भारत की अनुमानित जनसंख्या 1 अरब 50 करोड़ जाएगी और परिसीमन के बाद सीटों की संख्या बढ़कर 753 होने का अनुमान है। 2026 की अनुमानित जनसंख्या को अगर 543 सीटों के हिसाब से देखें, तो अभी 26 लाख वोटरों की एक लोकसभा है, जो साल 2001 में 18 लाख की थी। साल 2001 से 2026 की जनसंख्या में 38.5 प्रतिशत का परिवर्तन होगा। अगर इस परिवर्तन को सीटों में जोड़े तो कुल 210 सीटें बढ़ेगी यानि की 2026 में 543+210 को जोड़ दे, तो वो बढ़कर 753 सीट हो जाएगी। बता दें कि साल 1977 से अभी तक लोकसभा सीटों में परिवर्तन नहीं हुआ है। आखिरी बार परिसीमन 1977 में हुआ था।

बिडम्बना है कि लोकतांत्रिक राजनीति का अर्थ किसी भी तरह से वोट का जुगाड करना हो गया है। इसका नतीजा यह हुआ कि समाज और राजनीति में बिना वोट की राजनीति पूरी तरह लुप्त हो गई। भारत में आप सार्वजनिक रूप से कोई भी सवाल उठाओ तो उस पर बहस के बजाय, इसमें क्या राजनीति है, ऐसा सोचने लगते हैं। दूसरा काम हमारे देश में यह हुआ है कि देश की समूची राजनीति रात-दिन वोटों की घट-बढ़ का गणित करने में ही अपनी ऊर्जा

लगाए रहने में पूरी उलझ गई है। एक अरब चालीस करोड़ की आबादी वाले देश को शांतचित्त और प्रेमपूर्वक कैसे चलाया जाएगा यह ख्याल ही हमारे व्यक्तिगत और सामूहिक मन में आता ही नहीं है। इतनी बड़ी आबादी का देश सरकार बनाने और गिराने को ही राजनीतिक जीवन का मूल मंत्र मानने लगा है। आजादी के बाद से धीरे-धीरे हमारी राजनीतिक हलचल केवल वोट हासिल करने के एकमात्र व्यक्तिगत और सामूहिक उपक्रम में बदल गई है। सत्ता हासिल कर क्या और कैसे करेंगे? यह विचार-विमर्श और व्यवहार का विषय ही नहीं बन पाया है। लोकतंत्र में नागरिक चेतना नदारद हो, एक अजीब सी उदासीनता में बदल गई है। समूची राजनीति का एक सूत्री कार्यक्रम है कैसे चुनाव जीतें और सत्ता हासिल करें? इसी से हमारे देश की समूची राजनीति नागरिक ऊर्जा विहीन हो गई है। देश की लगभग सारी राजनीतिक जमातें इस सवाल पर बगले झांकने लगती है। 'सबको इज्जत और सबको काम देने' की दिशा में आजादी के 75 साल बाद भी हमारी राजनीति प्रभावी सकारात्मक कदम नहीं उठा पाई। लोकतांत्रिक ढंग से सत्ता हासिल कर भी देश की विशाल लोकऊर्जा निस्तेज क्यों हैं? यह मूल राजनीतिक सवाल है। 75 साल की चुनावी राजनीति के बाद भी भारतीय समाज में यह भाव मजबूत क्यों नहीं हुआ कि 'भारत सबका और सब भारत के'।

भारत के संविधान में पूरी संवैधानिक स्पष्टता होने के बावजूद भी धर्म, जाति, लिंग, स्थान और नस्ल के आधार पर भेदभाव पूर्ण व्यवहार करके प्राय: सभी राजनीतिक ताकतें मजबूती से भारत के लोगों द्वारा लड़ी गई लम्बी आजादी की लड़ाई की मूल भावना को ही ठेस पहुंचाने को अपनी राजनीति का मुख्य हिस्सा बनाकर, भारत के संविधान और आजादी आंदोलन की मुख्य धारा को ही सिकोड़ रहे हैं। भारत की असली ताकत भारत के लोग हैं और भारत के किसी भी नागरिक को अपमानित और अवांछित घोषित करने का अधिकार संविधान किसी भी निर्वाचित या अनिर्वाचित राजनीतिक या अराजनीतिक ताकत को सीधे या परोक्ष रूप से नहीं देता है। यही संविधान और आजादी आंदोलन की मूल भावना या नागरिकों की सार्वभौमिक ताकत हैं। भारत में सरकारें लोगों के मतों से ही चुनी जाती रही हैं और चुनी जाएंगी भी, पर यह एक यांत्रिक प्रक्रिया नहीं है। यह एक जीवंत लोकतांत्रिक व्यवस्था है जिसके मूल में स्वतंत्र, निष्पक्ष और पारदर्शी तरीके से सभी राजनीतिक दल भारतीय जनता को चैतन्य बना कर सहभागिता सुनिश्चित कर सकते हैं, पर हम आजाद भारत में राजनीति की विभिन्न धाराओं के बीच इसका एकदम उलटा परिदृश्य बना बैठे हैं। इसका नतीजा यह हुआ है कि भारत में नागरिकत्व वैसा नहीं खड़ा हो पाया, जिसकी कल्पना भारत के संविधान और आजादी आंदोलन की मूल भावना में निहित रही हैं। लोकतांत्रिक राजनीति व्यक्तिवादी नहीं हो सकती, यह विचार लोकतांत्रिक राजनीति की आधारशिला है। लोकतांत्रिक व्यवस्था मनमानी से नहीं सामूहिक विवेक और सहभागिता से ही चल सकती है। लोकतंत्र में लगातार विवेकशीलता, आपसी सहयोग बढ़ने के बजाय मनमानी और मनचाही कार्यप्रणाली का वर्चस्व बढ़ता ही जा रहा है। आजादी आंदोलन का मूल विचार भारतीय समाज और नागरिकों की ताकत और दैनंदिन जीवन की चुनौतियों को मिलजुल कर हल करने की लोकव्यवस्था को खड़ा करना था। अपने राजनीतिक वर्चस्व को कायम रखना ही लोकतांत्रिक समझदारी नहीं है। राजनीति वोटों की जुगाड नहीं है। भारत में लोगों को ताकतवर बनाने की राजनीति के बजाय अपने एकाकी राजनीतिक वर्चस्व को कायम करने की संकुचित राजनीति ताकतवर हो गई है। भारत का नागरिक ताकतवर संविधान के होते हुए भी निरंतर असहाय और कमजोर हो गया है। भारत में लगभग सारी राजनीतिक जमातें किसी भी तरह खुद को ताकतवर बनाने में जुटी हैं। इस परिदृश्य को समूचे देश में पूरी तरह बदल कर भारत के लोगों को ताकतवर बनाने की राजनीति का उदय करना काल की चुनौती है। बिना वोट की राजनीतिक चेतना उभरने पर ही हम भारतीय समाज और नागरिकों को निरन्तर आगे बढ़ाने वाली लोकतांत्रिक व्यवस्था को मजबूत कर सकते हैं। लोकाभिमुख राजनीति और अर्थव्यवस्था को खड़ा करना ही आजादी आन्दोलन की मूल भावना है। भारतीय लोकतंत्र में लोकाभिमुख विचार धारा को राजकाज में प्रतिष्ठित करने की दिशा में लोकसमाज को गोलबंद करने का वैचारिक आन्दोलन चलाये तो ही हम सब हिलमिल कर आजादी आन्दोलन की मूल भावना को साकार कर सकते हैं।

The Magic of the World Cup :

Uniting the Globe with Mostbet

The World Cup is not just a football tournament; it's a global festival that unites people from all corners of the Earth through their shared love for football. Amidst the cheering crowds and thrilling matches, there's another layer of excitement brewing – on the outcomes. In this sphere, Mostbet has emerged as a popular platform, offering fans a way to engage with the games on a whole new level.

The Thrill of the Game: with Mostbet

Football has transformed the way fans interact with the sport. It's no longer just about watching and cheering; it's about being an active participant in the festivities. Mostbet provides an accessible and user-friendly platform for fans around the world to place their bets, making the matches even more thrilling.

The Global Community of Football Fans

One of the most remarkable aspects of World Cup is the global community it fosters. People from different countries, speaking different languages, and supporting different teams come together on platforms like Mostbet. This unity in diversity is a beautiful reflection of the World Cup's spirit.

Ease of Use: Mostbet's platform is designed to be accessible to everyone, regardless of their experience.

Variety of Bets: From predicting match outcomes to specific player performances, there's a wide range of options.

Live : The excitement doesn't stop at kickoff. Live allows fans to place bets as the action unfolds.

Keeping the Spirit High and Fair

Responsible is at the core of Mostbet's philosophy. The platform ensures a fair and secure environment for all users, highlighting the importance of enjoying the game responsibly.

Secure Transactions: With advanced security measures, users can rest assured that their deposits and winnings are safe.

Fair Play: Integrity is non-negotiable. Mostbet adheres to strict fair play

regulations to ensure every bet is transparent and fair.

Responsible Gaming: Tools and resources are available to help users manage their activities and prevent problem gambling.

Uniting Through the Love of the Game

The World Cup brings people together in a celebration of football, culture, and unity. on the outcomes adds an extra layer of excitement and engagement for fans, making them feel like they're a part of the action.

The Emotional Rollercoaster

World Cup matches can be an emotional journey. The anticipation before a match, the thrill of a goal scored, and the suspense of the final whistle are intensified when there's a personal stake in the outcome.

Stories of Triumph and Loss

Every bet has a story. Whether it's the underdog team that defied odds or a last-minute goal that changed everything, these stories stay with fans long after the tournament is over. They become part of the rich tapestry of World Cup history.

The Evolution of : From Past to Present

The landscape of sports , particularly during global events like the World Cup, has seen a monumental shift over the years. Gone are the days when was confined to the shadows, a pastime whispered about in hushed tones. Today, it stands proudly in the limelight, embraced by fans and enthusiasts as a legitimate and exhilarating aspect of sports culture. This transformation is not just about legality or accessibility; it's about the evolution of fan engagement and the

democratization of sports enthusiasm.

Historical Context: In the past, sports was a niche activity, available to those in the know or willing to seek it out in less accessible venues.

Technological Advancements: The advent of the internet and mobile technology has revolutionized , making it as easy as a few taps on a smartphone.

Cultural Shift: Society's perception of has transformed, with many now viewing it as a form of entertainment and a way to deepen one's connection to the sport.

This evolution has been mirrored in the offerings of platforms like Mostbet, which leverage technology and a deep understanding of sports culture to provide a user-friendly and engaging experience.

The Role of Data and Analytics in Mostbet

In today's digital age, data and analytics play a pivotal role in sports , especially in events as significant as the World Cup. The ability to access and interpret vast amounts of data has changed the game for bettors, offering insights that were previously unattainable.

Informed Decisions: Bettors can now make more informed decisions, thanks to detailed statistics on teams, players, and historical performance.

Real-Time Updates: Live data feeds provide real-time updates on matches, greatly enhancing the live experience.

Strategic : Advanced analytics allow for more strategic , with insights into trends, patterns, and probabilities.

Platforms like Mostbet utilize these data and analytics to offer a more sophisticated experience, aligning with the needs and expectations of today's savvy bettors. This fusion of technology and sports has not only made more accessible but also more engaging and informed.

Conclusion: A Festival of Football and Friendship

The World Cup is more than just a tournament; it's a global celebration of football, friendship, and unity. On the matches with Mostbet adds an extra dimension to the excitement, bringing fans closer to the action and each other. As we look forward to the next World Cup, let's remember the magic that happens when the world comes together, united by a love for the beautiful game.

आबकारी घोटाला केजरीवाल के बाद के. कविता जेल में

● **अमित कुमार**

दिल्ली शराब घोटाले के मामले में तिहाड़ जेल में बंद दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविन्द केजरीवाल को सुप्रीम कोर्ट से भी राहत नहीं मिली है। हालांकि शीर्ष अदालत ने केजरीवाल की याचिका पर प्रवर्तन निदेशालय से जवाब मांगा है। सुप्रीम कोर्ट ने इस मामले की अगली सुनवाई 29 अप्रैल तय की है। हालांकि कोर्ट ने इस मामले में ईडी को नोटिस जारी 24 अप्रैल तक जवाब मांगा है। केजरीवाल के वकील अभिषेक मनु सिंघवी ने इस मामले में जल्द सुनवाई की मांग की थी। दरअसल, दिल्ली हाईकोर्ट ने ने केजरीवाल को झटका देते हुए मनी लॉन्ड्रिंग के मामले में उनकी गिरफ्तारी को वैध करार दिया था और कहा था कि बार-बार समन जारी करने के बावजूद जांच में शामिल होने से इनकार करने के बाद ईडी के पास 'थोड़ा विकल्प' बचा था। इसके बाद हाईकोर्ट ने केजरीवाल की याचिका को खारिज कर दिया था। इसके बाद केजरीवाल ने हाईकोर्ट के फैसले को चुनौती दी थी। ईडी ने 21 मार्च को अरविंद केजरीवाल को गिरफ्तार किया था। बता दें कि यह मामला 2021-22 के लिए दिल्ली

सरकार की आबकारी नीति बनाने और कार्यान्वयन में कथित भ्रष्टाचार और धनशोधन से संबंधित है। हालांकि इस नीति को बाद में रद्द कर दिया गया था। इसी मामले में दिल्ली के पूर्व उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया और आम आदमी पार्टी नेता संजय सिंह भी गिरफ्तार हुए थे। मनीष सिसोदिया अब भी जेल में बंद हैं, लेकिन संजय सिंह को जमानत मिल गई है। ऐसे में कहा जा सकता है कि आम आदमी पर मुसीबत आई हुई है। दिल्ली के सीएम अरविंद केजरीवाल और मनीष सिसौदिया जेल में हैं। आम आदमी के नेता संजय सिंह हाल ही में जमानत पर जेल से बाहर आए हैं। केजरीवाल पर शराब नीति मामले में ईडी की तलवार लटकी ही हुई है। ऐसे में आम आदमी पार्टी पूरी तरह से बिखरी हुई है। दिलचस्प है कि इस संकट के समय में आम आदमी के 7 सांसद लंबे समय से गायब हैं। जबकि लोकसभा में एकमात्र सांसद सुशील कुमार रिंकू ने भाजपा ज्वॉइन कर ली है। हालांकि कुछ सांसद सोशल मीडिया पर सक्रिय हैं, लेकिन ज्यादातर आम आदमी पर चल रहे संकट पर अपनी सक्रियता नहीं दिखाई है। इनमें राघव चड्ढा का नाम पहले आता है। राघव चड्ढा के बारे में कहा गया कि वह अपनी आंख का ऑपरेशन करवाने के लिए लंदन गए थे। वे मार्च में लौटने वाले थे, लेकिन अब तक नहीं लौटे। हालांकि राघव सोशल मीडिया पर सक्रिय नजर आ रहे हैं। कहा जा रहा है कि डॉक्टर्स की सलाह पर राघव सूरज की रोशनी में

बाहर नहीं निकल रहे हैं। वही स्वाति मालिवाल ने हाल ही में आम आदमी पार्टी ज्वॉइन की थी। जिसके बाद उन्हें राज्यसभा सांसद बनाया गया। स्वाति अमेरिका में हैं और अपनी बहन का इलाज करवा रही हैं। हालांकि स्वाति भी सोशल मीडिया पर सक्रिय हैं। इंडियन एक्सप्रेस अखबार से चर्चा में स्वाति ने कहा कि वे अपनी बीमार बहन का साथ अमेरिका में हैं। बहन की तबीयत ठीक होने पर वे भारत लौट आएंगी और राजनीतिक गतिविधियों में शामिल होगी। साथ ही हरभजन सिंह तो आम आदमी पार्टी के कार्यक्रमों में शुरू से ही कम ही दिखते हैं। केजरीवाल की गिरफ्तारी के बाद भी हरभजन सिंह की कोई प्रतिक्रिया नहीं आई। उनके बारे में रिपोर्ट है कि सोशल मीडिया पर हरभजन सिंह की पोस्ट आईपीएल को लेकर नजर आती है, लेकिन राजनीति या आम आदमी पार्टी को लेकर उनका कोई ट्वीट आदि नजर नहीं आता है। इंडियन एक्सप्रेस ने हरभजन सिंह से पूछा कि क्या आप पार्टी के विरोध प्रदर्शनों में शामिल होंगे? हरभजन सिंह ने सिर्फ इतना जवाब दिया-नहीं। वही विक्रमजीत सिंह, केजरीवाल की गिरफ्तारी या आम आदमी पार्टी के विरोध प्रदर्शनों में कहीं सक्रिय नजर नहीं आए हैं। हालांकि सोशल मीडिया पर उन्होंने स्टैनफर्ड यूनिवर्सिटी में स्टूडेंट्स के साथ बातचीत का वीडियो साझा किया है। उनके बारे में कहा जाता है कि वे गैर-राजनीतिक हैं। इसके बाद अशोक मित्तल, लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी के फाउंडर हैं। वे राजनीति गतिविधियों से दूर हैं। उन्होंने कहा था कि 'आप' के विरोध प्रदर्शनों पर बोलना मेरे अधिकार क्षेत्र में नहीं है। पार्टी मुख्यालय हमें बताएगा कि क्या करना है और क्या नहीं। मित्तल ने दावा किया था कि उनको पार्टी के विरोध प्रदर्शनों में बुलाया भी नहीं गया। बात अगर बलबीर सिंह की करे तो वह पर्यावरण विषयों पर काम करते हैं। मगर बीते दिनों हुए विरोध प्रदर्शनों में वो नजर नहीं आए हैं। वो बोले कि मैं धर्म निभाने वाला इंसान हूं, अगर कोई प्लान होगा तो साझा किया जाएगा। अब संजीव अरोड़ा की बात करें तो संजीव ने कहा कि वो केजरीवाल की पत्नी से 24 मार्च को मिले थे। हालांकि उन्होंने इंडिया गठबंधन के विरोध प्रदर्शन में शामिल नहीं होने की बात को स्वीकार किया। संजीव ने कहा कि मुझे पार्टी ने लुधियाना में कुछ जिम्मेदारियां दी हैं। मैं लगातार एनडी गुप्ता जी के संपर्क में हूं। अगर मुझे बुलाया जाएगा, तो मैं जरूर जाऊंगा।

बहरहाल, आबकारी

मामले में मनीष सिसोदिया, संजय सिंह के बाद अरविंद केजरीवाल तक जेल में हैं और अब BRS नेता के. कविता की भी गिरफ्तारी हो चुकी है। दिल्ली आबकारी मामले में सीबीआई ने बीआरएस नेता के. कविता को गिरफ्तार कर लिया। इससे पहले ईडी ने भी उन्हें इसी मामले से जुड़े धन शोधन मामले में गिरफ्तार किया था। तेलंगाना के पूर्व मुख्यमंत्री के. चंद्रशेखर राव की बेटी कविता प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) द्वारा गिरफ्तार किए जाने के बाद से तिहाड़ जेल में हैं। सीबीआई ने उन्हें वहीं से गिरफ्तार किया। सीबीआई के अधिकारियों ने हाल में एक विशेष अदालत से अनुमति लेने के बाद जेल के अंदर कविता से पूछताछ की थी। बीआरएस नेता से सह-आरोपी बुच्ची बाबू के फोन से बरामद व्हाट्सऐप चैट और एक भूमि सौदे से संबंधित दस्तावेजों के बारे में पूछताछ की गई थी। कविता पर आरोप है कि उन्होंने आम आदमी पार्टी को आबकारी नीति में बदलाव के लिए रिश्वत के रूप में 100 करोड़ रुपए दिए थे। इन पहलुओं पर कविता से पूछताछ के लिए सीबीआई अधिकारी तिहाड़ जेल गए थे। ईडी ने कविता को 15 मार्च को हैदराबाद के बंजारा हिल्स स्थित उनके आवास से गिरफ्तार किया था। इसके बाद केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो ने यहां नई दिल्ली की एक विशेष अदालत में कहा कि भारत राष्ट्र समिति (BRS) की नेता के. कविता ने अरबिन्दो फार्मा के प्रवर्तक शरत चंद्र रेड्डी को दिल्ली सरकार की आबकारी नीति के तहत उनकी कंपनी को आवंटित 5 खुदरा क्षेत्र के लिए आम आदमी पार्टी (आप) को 25 करोड़ रुपए की राशि देने की कथित तौर पर धमकी दी थी। सीबीआई के अनुसार कविता ने रेड्डी से कहा था कि अगर वह राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में सत्तारूढ़ आम आदमी पार्टी (आप) को पैसा नहीं देते हैं तो तेलंगाना और दिल्ली में उनके कारोबार को नुकसान पहुंचेगा। दिल्ली में कथित शराब घोटाले से जुड़े धन शोधन के एक मामले में आरोपी रेड्डी मामले में सरकारी गवाह बन गया है। इस मामले की जांच प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) कर रहा है। सीबीआई ने अभी तक उसके खिलाफ कोई आरोपपत्र दाखिल नहीं किया है। बीआरएस नेता कविता से हिरासत में पूछताछ का अनुरोध करते हुए सीबीआई ने विशेष न्यायाधीश कावेरी बावेजा को बताया कि तेलंगाना के पूर्व मुख्यमंत्री के. चंद्रशेखर राव की बेटी कविता के जोर देने पर और आश्वासन पर, रेड्डी दिल्ली में शराब कारोबार से जुड़ा। कविता ने रेड्डी को कथित तौर पर आश्वासन दिया था कि उनके दिल्ली सरकार में संपर्क हैं और वह आबकारी नीति के तहत राष्ट्रीय राजधानी में शराब के कारोबार में उनकी मदद करेंगी जो अब निरस्त हो चुकी है। सीबीआई ने अदालत को बताया कि कविता ने शरत चंद्र रेड्डी से कहा था कि शराब कारोबार करने के लिए आम आदमी पार्टी को प्रत्येक खुदरा क्षेत्र के लिए 5-5 करोड़ रुपए का भुगतान करना है और इतना ही

भुगतान उनके साथियों अरुण आर. पिल्लई और अभिषेक बोइनपल्ली को करना है, जो बदले में विजय नायर से समन्वय करेंगे, जो कि अरविंद केजरीवाल का प्रतिनिधि था।

बहरहाल, अदालत ने कविता को 15 अप्रैल तक सीबीआई की हिरासत में भेज दिया है। जांच एजेंसी के अनुसार मार्च और मई 2021 में जब आबकारी नीति तैयार की जा रही थी तो पिल्लई, बोइनपल्ली और बुच्चि बाबू गोरंटला कुछ प्रावधान जोड़कर नायर के माध्यम से नीति को अपने पक्ष में करने के लिए दिल्ली में ओबरॉय होटल में रुके थे। सीबीआई ने आरोप लगाया कि कविता से सहयोग का आश्वासन मिलने के बाद अरबिन्दो रिएलिटी एंड इंफ्रास्ट्रक्चर प्राइवेट लिमिटेड ने मार्च 2021 में कॉरपोरेट सामाजिक जिम्मेदारी (सीएसआर) के तहत एनजीओ तेलंगाना जागृति को 80 लाख रुपए दिए थे। उसने कहा कि जांच में पता चला कि जून-जुलाई 2021 में के. कविता ने शरत चंद्र रेड्डी को तेलंगाना के महबूब नगर में स्थित एक कृषि भूमि के लिए उनके साथ बिक्री समझौता करने के लिए मजबूर किया जबकि वह उस जमीन को खरीदना नहीं चाहता था और उसे जमीन की कीमत भी नहीं पता थी। सीबीआई ने रेड्डी के बयान और अपनी जांच के हवाले से अदालत को बताया कि कविता ने इस पर जोर दिया कि रेड्डी जमीन के बदले में 14 करोड़ रुपए का भुगतान करे और उसे जुलाई 2021 में अरबिंदो समूह की कंपनियों में से एक माहिरा वेंचर्स प्राइवेट लिमिटेड के माध्यम से बिक्री समझौता करने के लिए मजबूर किया। उसने कहा कि कविता को बैंक लेन-देन के माध्यम से कुल 14 करोड़ रुपए का भुगतान किया गया। जुलाई 2021 में 7 करोड़ रुपए और नवंबर 2021 में 7 करोड़ रुपए। एजेंसी ने आरोप लगाया कि नंवबर और दिसंबर 2021 में कविता ने रेड्डी को आवंटित 5 खुदरा जोन के लिए 25 करोड़ रुपए का भुगतान करने को कहा। बीआरएस नेता ने दावा किया था कि उन्होंने खुद आबकारी नीति में अनुकूल प्रावधान प्राप्त करने के लिए रेड्डी की ओर से नायर के माध्यम से आप को 100 करोड़ रुपए की अग्रिम राशि का भुगतान किया था। एजेंसी ने रेड्डी के बयान के हवाले से आरोप लगाया, हालांकि, जब शरत चंद्र रेड्डी ने यह पैसा देने से इनकार किया तो के. कविता ने आबकारी नीति के तहत तेलंगाना और दिल्ली में उसके कारोबार को नुकसान पहुंचाने की धमकी दी थी। आप ने 24 मार्च को आरोप लगाया था कि रेड्डी की कंपनी ने चुनावी बॉण्ड के जरिए भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) को 59.5 करोड़ रुपए दिए थे।

गौरतलब है कि दिल्ली शराब घोटाला केस से जुड़े सीबीआई मामले में गिरफ्तार बीआरएस नेता के. कविता को कोर्ट से बड़ा झटका लगा है। के कविता अभी जेल में ही रहेंगी। दिल्ली के राउज एवेन्यू कोर्ट ने सीबीआई की मांग पर मुहर लगा दी है। के. कविता को 23 अप्रैल तक न्यायिक हिरासत मे भेज दिया। सीबीआई ने के. कविता को न्यायिक हिरासत में भेजे जाने की मांग की थी। दरअसल, बीआरएस नेता के. कविता को राउज एवेन्यू कोर्ट में लाया गया। स्पेशल जज कावेरी बावेजा की कोर्ट में मौजूद के. कविता ने आरोप लगाया कि सीबीआई बार-बार एक ही सवाल पूछ रही है। इससे पहले सीबीआई ने के. कविता को 3 दिन की रिमांड में लिया था। न्यायिक हिरासत में भेजे जाने से पहले अदालत में के. कविता ने कहा कि ये सीबीआई कस्टडी नहीं है, बीजेपी कस्टडी है। उन्होंने आरोप लगाया कि सीबीआई की ओर से बार-बार एक ही सवाल पूछा जा रहा है। बता दें कि दिल्ली शराब नीति घोटाला मामले में सीबीआई ने 6 अप्रैल को तिहाड़ जेल में बंद के. कविता से पूछताछ भी की थी, जिसके बाद 11 अप्रैल को उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। इससे पहले सीबीआई ने कविता की पांच दिन की हिरासत की मांग करते हुए अदालत से कहा था कि वह जांच में सहयोग नहीं कर रहीं और जवाबों में टालमटोल कर रही हैं। सीबीआई ने कहा था, 'पूछताछ के दौरान उन्होंने अपनी भूमिका के संबंध में संतोषजनक जवाब नहीं दिया। उनके जवाब जांच के दौरान सीबीआई

द्वारा बरामद दस्तावेजों के विरोधाभासी थे। कविता उन तथ्यों को छिपा रही हैं जिनके बारे में उन्हें विशेष रूप से जानकारी है। इससे पहले भी वह समन जारी होने के बावजूद जांच में शामिल नहीं हुई थीं। इसलिए, हमें साजिश का पर्दाफाश करने के लिए उनकी पांच दिन की हिरासत की जरूरत है' बता दें कि सीबीआई ने एक विशेष अदालत की अनुमति लेकर हाल में तेलंगाना के पूर्व मुख्यमंत्री के. चंद्रशेखर राव की बेटी कविता से जेल के अंदर पूछताछ की थी। ज्ञात हो कि ईडी ने कविता को 15 मार्च को हैदराबाद में उनके बंजारा हिल्स स्थित आवास से गिरफ्तार किया था।

बहरहाल, सुप्रीम कोर्ट कथित आबकारी नीति घोटाले से संबंधित मनी लॉन्ड्रिंग मामले में दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की उस याचिका पर 29 अप्रैल को सुनवाई करने वाला है, जिसमें उन्होंने अपनी गिरफ्तारी को चुनौती दी है। न्यायमूर्ति संजीव खन्ना और दीपांकर दत्ता की पीठ इस मामले पर सुनवाई कर सकती है। केजरीवाल ने पहले शीर्ष अदालत से कहा था कि इस मामले में उनकी 'अवैध गिरफ्तारी' 'स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव' और 'संघवाद' पर आधारित लोकतंत्र के सिद्धांतों पर एक अभूतपूर्व हमला है। इस मामले में गिरफ्तारी को चुनौती देने वाली उनकी याचिका पर दायर प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) के जवाबी हलफनामे के प्रत्युत्तर में केजरीवाल ने कहा कि लोकसभा चुनाव से ठीक पहले उनकी गिरफ्तारी का तरीका और समय एजेंसी की 'मनमानी' के बारे में बहुत कुछ कहता है। उन्होंने कहा है कि उनकी गिरफ्तारी ऐसे समय हुई जब चुनाव से संबंधित आदर्श आचार संहिता लागू हो गई थी। केजरीवाल ने दावा किया कि यह एक 'प्रमुख मामला' है कि कैसे केंद्र ने आम आदमी पार्टी (आप) और उसके नेताओं को 'कुचलने' के लिए धनशोधन निवारण अधिनियम (पीएमएलए) के तहत ईडी और इसकी व्यापक शक्तियों का दुरुपयोग किया है। इसमें दावा किया गया है कि आम चुनाव की घोषणा होने और आदर्श आचार संहिता लागू होने के पांच दिन बाद ईडी ने एक मौजूदा मुख्यमंत्री और राष्ट्रीय विपक्षी दलों में से एक के राष्ट्रीय संयोजक को अवैध रूप से 'पकड़' लिया। केजरीवाल ने कहा कि समान अवसर 'स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव' की एक पूर्ववर्ती जरूरत है, लेकिन उनकी अवैध गिरफ्तारी से इसका स्पष्ट उल्लंघन हुआ है। ईडी ने 21 मार्च को केजरीवाल को गिरफ्तार कर लिया था क्योंकि दिल्ली उच्च न्यायालय ने उन्हें धनशोधन रोधी संघीय एजेंसी द्वारा दंडात्मक कार्रवाई से संरक्षण देने से इनकार कर दिया था। वह फिलहाल न्यायिक हिरासत के तहत तिहाड़ जेल में बंद हैं। शीर्ष अदालत ने 15 अप्रैल को ईडी को नोटिस जारी किया था और केजरीवाल की याचिका पर उससे जवाब मांगा था। हाईकोर्ट ने 9 अप्रैल को मनी लॉन्ड्रिंग मामले में केजरीवाल की गिरफ्तारी को बरकरार रखा था और कहा था कि इसमें कुछ भी अवैध नहीं है। उच्च न्यायालय ने कहा कि बार-बार समन जारी करने और जांच में शामिल होने से इनकार करने के बाद ईडी के पास 'कम विकल्प' बचे थे। यह मामला 2021-22 के लिए दिल्ली सरकार की आबकारी नीति के निर्माण और क्रियान्यन में कथित भ्रष्टाचार और धनशोधन से संबंधित है, जिसे बाद में रद्द कर दिया गया था।

Why are cancer cases rising in India?

Praful Reddy, 49, an IT professional from the southern Indian state of Andhra Pradesh, has lung cancer and has been undergoing treatment, including targeted therapy, chemotherapy and radiation, to stop its spread since he was diagnosed two years ago.

Vomiting, headaches and ulcers are a few of the recurring side effects that he faces and he doesn't know whether he will get better, although doctors are holding out hope for his recovery. "The doctors have been administering drugs to block the growth and spread of cancer cells. If it does not improve, I might have to undergo a lobectomy to remove the entire lobe of one lung," Reddy told DW. In the city of Bengaluru, in the neighboring state of Karnataka, 12-year-old Dipti is receiving treatment for Wilms tumor, a rare type of cancer that originates in the kidneys and mainly affects children. "She is undergoing radiation therapy for now, but it has caused side effects such as skin damage and hair loss," her doctor, Charu Sharma, told DW. These aren't isolated cases and an increasing number of people, especially children, in India are being diagnosed with cancer, marking the fastest rise in cases worldwide.

Cancer capital of the world?

A report released by the Indian multinational health care group, Apollo Hospitals, last month labeled the South Asian nation as "the cancer capital of the world." The study revealed an alarming picture of declining overall health across India, pointing to soaring cases of cancer and other non-communicable diseases. It found that at present, one in three Indians is pre-diabetic, two in three are pre-hypertensive and one in 10 struggles with depression. Chronic conditions like cancer, diabetes, hypertension, car-

diovascular diseases and mental health disorders are now so prevalent that they have reached "critical levels," it added. The study projected the number of annual cancer cases would rise to 1.57 million by 2025, from almost 1.4 million in 2020. Breast, cervical and ovarian cancer are the most common forms affecting women, while cancer of the lung, the mouth and the prostate are those most affecting men. "Cancer cases and deaths are rising and are expected to rise further over the next two decades," said K. Srinath Reddy, the former president of the Public Health Foundation of India.

"Contributory factors to rising incidence are advancing age, unhealthy diets with ultra-processed foods stoking inflammation, exposure to air pollution laden with carcinogens and climate change with increased exposure to ultraviolet radiation," he explained.

Children increasingly affected by cancer

The Apollo Hospitals report also detailed how certain cancers were affecting people in India at an earlier age than in certain other countries. The median age for lung cancer is 59 in India, but 68 in China, 70 in the United States and 75 in the United Kingdom. Around a million new cases of cancer are detected in India every year, 4% of which are in children. Doctors and other health professionals have deplored the shortage of pediatric oncology facilities. "Most private hospitals have trained pediatric oncologists, but this may not be the case in medical colleges or government hospitals," said Ruchira Misra, pediatric oncologist and senior consultant at Mumbai's MRR Children's Hospital. "Only 41% of public hospitals have dedicated pediatric oncology departments," she added. A lack of funds and access to care, as well as social stigma, were big hurdles for many affected families, she continued. "Diagnosis, access to care and medications and follow-up are difficult and there is a lot of abandonment of treatment as the parents cannot afford treatment," she said.

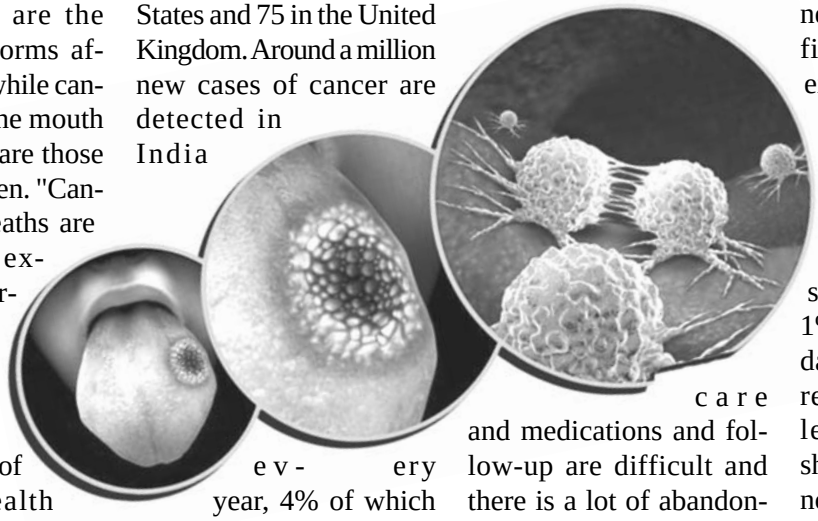

Regular screenings needed

Experts say low health screening rates in the country pose a significant challenge for the fight against cancer, and stress the importance of preventive health care measures. "There is no doubt that cancer is growing and there needs to be prioritized action by everyone. The government should incentivize screening as a first measure," said Nitesh Rohatgi, a senior director of medical oncology at the Fortis Memorial Research Institute. "There is also a need for policies to impart financial protection and expand the screening and curative services for cancer," he added. India has a screening program in place for oral, breast and cervical cancer, but screening rates are below 1%, according to national data, despite the WHO's recommendation that at least 70% of women should be tested. "I would not want to call it an epidemic but we will see cancer cases double by 2040 compared to 2020. A lot of them can be prevented at the individual, societal and governmental levels," said Asit Arora, director of cancer care at the Max Super Speciality Hospital in the Indian capital, Delhi. "If we don't do anything we, as a society, will be paying a heavy price."

अवैध खनन माफियाओं के हमलों में कई अफसरों ने गंवा दी अपनी जान

मध्य प्रदेश समेत पूरे देश में अवैध रेत खनन माफिया बेखौफ हैं। आए दिन इनके हमलों में सरकारी अफसरों की जान जा रही है। ताजा मामले में शहडोल में ASI महेंद्र बागड़ी को रेत माफिया ने ट्रेक्टर से बुरी तरह कुचल दिया। ASI की मौके पर ही मौत हो गई। यह कोई पहली बार नहीं है जब रेत माफियाओं के हमलों में अफसरों और कर्मचारियों की जान गई हो। इसके पहले रेत माफियाओं ने आईपीएस और डीएसपी स्तर के अधिकारियों की भी हत्याएं कर दी। एक रिपोर्ट के मुताबिक पूरे देश में करीब 200 अधिकारियों और कर्मचारियों को माफियाओं द्वारा मार दिया गया। इनमें पुलिस विभाग से लेकर वन विभाग के छोटे-बड़े कर्मचारी शामिल हैं।

गौरतलब है कि ASI महेंद्र बागड़ी की मौत के मामले में मध्य प्रदेश के सीएम मोहन यादव ने निर्देश दिए हैं, जिसके बाद रेत माफिया सुरेंद्र सिह सहित ट्रेक्टर चालक राज रावत कोल के खिलाफ

जिला प्रशासन ने कार्रवाई की। अवैध रूप से बनाए उसके मकान को बुलडोजर से ढहा दिया गया है। जबकि फरार ट्रेक्टर मालिक पर 30 हजार का इनाम रखा गया है, हालांकि यह कार्रवाई नाकाफी है, क्योंकि बावजूद इस के अफसरों पर माफियाओं के हमले नहीं थम रहे हैं। मध्य प्रदेश में रेत के अवैध उत्खनन पर रोक लगाने के तमाम सरकारी दावे सिर्फ कागजों में सिमटकर रह गए हैं। यहां यह कारोबार बेखौफ चल रहा है। प्रदेश में अवैध उत्खनन का सबसे बड़ा कारोबार चंबल, नर्मदा, क्षिप्रा, बेतवा, सोन जैसी बड़ी नदियों से चलता है। यहां सक्रिय रेत माफिया का एक छत्र राज है। प्रदेश की चंबल नदी से रेत निकालने पर पिछले डेढ़ दशक से रोक लगी हुई है, लेकिन हर महीने अंदाजन 35 से 40 करोड़ या इससे ज्यादा का कारोबार रेत खनन से होता है। बता दें कि यह कोई पहली बार नहीं है जब अवैध रेत खनन माफियाओं ने कार्रवाई करने पहुंची टीम पर हमले किए हों। पुलिस और वन विभाग की टीम पर कई बार हमले हुए हैं। इंदौर, भोपाल, ग्वालियर, देवास आदि जिलों में लगातार टीम पर हमलों की खबरें आती रही हैं। ऐसे कई उदाहरण है, जो इस प्रकार है :-

☞ मुरैना जिले के बानमोर एसडीओपी आईपीएस नरेंद्र कुमार पर ड्राइवर

नरेन्द्र कुमार

महेन्द्र बागड़ी

मनोज ने ट्रेक्टर चढ़ा दिया था, जिससे उनकी मौत हो गई थी। यह घटना 2012 की है। अवैध रूप से खनन ले जाए जा रहे पत्थरों के ट्रैक्टर को रोकने की कार्रवाई करने गए थे। ट्रैक्टर रोकने के लिए चालक को इशारा किया, लेकिन चालक ने तेज रफ्तार कर दी। नरेंद्र कुमार ट्रैक्टर पर चढ़े तब भी चालक ने ट्रैक्टर नहीं रोका तो वे ट्रैक्टर पर लटक गए। उन्होंने एक हाथ से स्टेयरिंग पकड़ लिया तो चालक ने नरेंद्र कुमार को धक्का देकर नीचे गिरा दिया और उन पर ट्रैक्टर चढ़ा दिया, जिससे नरेंद्र कुमार की मौत हो गई थी।

☞ जून 2015 में शाजापुर जिले के गांव शुजालपुर इलाके में मौजूद खनन इलाके में महिला माइनिंग इंस्पेक्टर रीना पाठक टीम के साथ छापा मारने गई थीं। महिला खनन अधिकारी रीना पाठक को एक शिकायत की पुष्टि के लिए खनन इलाके में भेजा गया था। खनन माफिया को इसकी जैसे ही भनक लगी, उसने टीम को घेर लिया। हमले में होमगार्ड के तीन जवान

बुरी तरह जख्मी हो गए थे। इसी तरह डिंडोरी में पदस्थ आईएएस अफसर काजल जावला को कार्रवाई करने पर अवैध खनन करने वालों ने धमकी दी थी।

☞ मई 2022 में अशोक नगर जिले में अवैध खनन कर रेत ले जा रहे माफियाओं को वन कर्मियों ने पकड़ा तो माफियाओं ने वन कर्मियों पर लाठी डंडों से हमला कर दिया। पत्थर फेंके, रेंजर से राइफल छुड़ाने की कोशिश की। हमले में वन विभाग के एक अधिकारी के हाथ में फ्रैक्चर हो गया।

☞ 11 फरवरी 2020 में रतलाम के आलोट में क्षिप्रा नदी से रेत निकाल रही तीन जेसीबी जब्त कर थाने ले जा रहे खनिज विभाग पर गुंडों ने हमला किया था। अपने साथियों को बचाने महिला खनिज निरीक्षक भावना सेंगर गाड़ी से उतरी तो बदमाशों ने उन पर हमला कर दिया।

☞ 18 जून 2017 को आईएएस अफसर सोनिया मीणा छतरपुर के राजनगर में एसडीएम के पद पर तैनात थीं। 8 फरवरी 2017 में उन्होंने खनन माफिया के रेत से भरे वाहन पकड़े थे, इसके बाद उन पर जानलेवा हमला हुआ। रेत के ट्रैक्टर छीनकर ले गए थे।

☞ मार्च 2024 में मध्य प्रदेश के

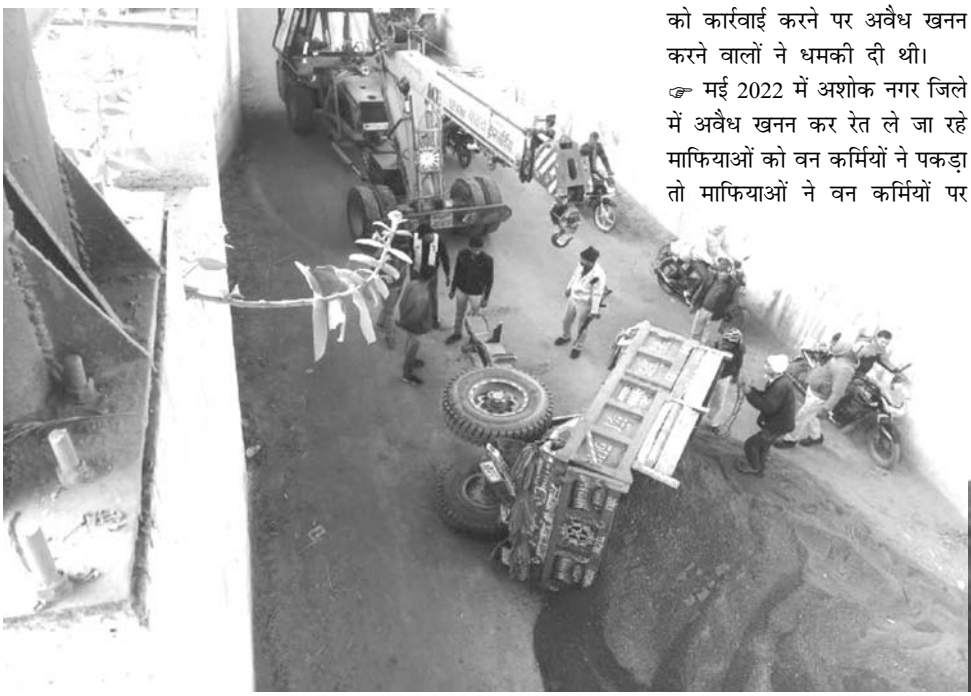

रीना पाठक

आईएएस सोनिया मीणा

शाजापुर जिले में खनन विभाग के अधिकारियों पर हमला किया था। हमले में कई अधिकारी घायल हुए। घटना कालापीपल के मोहम्मदपुर गांव का था। यहां खनन विभाग के अधिकारी शिकायत मिलने के बाद खनिज उत्खनन का ठेका लेने वाली निजी कंपनी के खिलाफ कार्रवाई करने पहुंची थी। टीम मौके पर पहुंची तो ग्रामीणों ने हमला कर दिया। अधिकारियों को भागना पड़ा।

☞ साल 2021 में ग्वालियर-चंबल के इलाके में रेत माफिया ने सिर्फ 15 दिनों के अंदर चार बार पुलिस और वन विभाग टीम पर हमला बोला था। इसी साल दतिया में रेत माफिया ने एक पुलिस जवान को गोली मार दी थी। इस घटना के बाद ग्वालियर के पुरानी छावनी के जलालपुर इलाके में चंबल से रेत ला रहे माफिया ने पेट्रोलिंग कर रहे टीआई सुधीर सिंह पर हमला बोल दिया। पुलिस टीम पर फायरिंग शुरू कर दी। रेत चोरों ने घिर चुके टीआई को जमकर पीटा। टीआई ने नाले में कूदकर जैसे-तैसे जान बचाई थी।

☞ एक अन्य घटना में ग्वालियर में रेत माफिया ने पुलिस पर गोलियां चलाईं और ट्रैक्टर, डंपर से कुचलने की कोशिश की।

☞ रेत माफिया के गुर्गे दतिया के नजदीक ग्वालियर-झांसी हाईवे पर वन विभाग की टीम पर हमला कर रेत से भरा ट्रक और ट्राली छीनकर ले गए थे। इसमें एक वन आरक्षक घायल हुआ था।

☞ जनवरी 2021 में मुरैना में सबलगढ़ टीआई नरेन्द्र शर्मा पर हमला किया था। 30 जनवरी को श्योपुर में वनरक्षकों पर हमला और कब्जे से रेत से भरी ट्रैक्टर-ट्राली छुड़ाई थी। वहीं, श्योपुर में ही रेत माफियाओं ने हीरापुर वन चौकी पर हमला किया था।

☞ अनूपपुर जिले में दो कर्मचारियों के साथ रेत माफिया को पकड़ने पहुंचे सहायक वनक्षेत्र अधिकारी को माफिया ने ही 3 घंटे तक बंधक बनाकर रखा। अगली बार सामने आने पर जान से मारने की धमकी दी थी। पन्ना जिले का अजयगढ़ हो या सिंगरौली पुलिस और वन विभाग की टीम पर रेत माफिया के हमले की कई घटनाएं पिछले दिनों सामने आ चुकी हैं।

☞ 2015 में कार्रवाई करने गई देवास की तहसीलदार मीना पाल पर अवैध रेत खनन माफियाओं ने हमला किया था। उन्होंने जैसे तैसे भागकर जान बचाई थी।

एक रिपोर्ट बताती है कि खनन से जुड़ी घटनाओं, गिरोहों की आपसी दुश्मनी और रेत माफियाओं के सरकारी अधिकारियों और कर्मचारियों पर हमलों में देशभर में कम से कम 193 लोगों की हत्याएं कर दी गई, संख्या इससे ज्यादा भी हो सकती है।

टीआई सुधीर सिंह

रामनवमी पर अयोध्या में रामलला का सूर्य तिलक लाखों श्रद्धालु अयोध्या पहुंचे

उत्तर प्रदेश के अयोध्या में भगवान श्री रामलला के 'सूर्य तिलक' के लिए सभी तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। रामनवमी के दिन दोपहर के समय सूर्य की किरणें रामलला के मस्तक पर पड़ेंगी और दर्पण व लेंस से जुड़े एक विस्तृत तंत्र द्वारा उनका 'सूर्य तिलक' संभव हो सकेगा। रामनवमी पर 30 लाख से अधिक श्रद्धालुओं के अयोध्या पहुंचने की उम्मीद है। इस अवसर सुरक्षा का भी कड़ा इंतजाम किया गया है। अयोध्या में 22 जनवरी को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा प्राण-प्रतिष्ठा समारोह में नए मंदिर में भगवान राम की मूर्ति की प्रतिष्ठा के बाद यह पहली रामनवमी होगी। इस प्रणाली का परीक्षण वैज्ञानिकों ने किया। इसे 'सूर्य तिलक परियोजना' का नाम दिया गया है। वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद (CSIR)-CBRI रुड़की के वैज्ञानिक डॉ० एसके पाणिग्रही ने बताया कि सूर्य तिलक परियोजना का मूल उद्देश्य रामनवमी के दिन श्री राम की मूर्ति के मस्तक पर एक तिलक लगाना है। परियोजना के तहत रामनवमी के दिन दोपहर के समय भगवान राम के मस्तक पर सूर्य की रोशनी लाई जाएगी।

☞ **12 बजे होगा सूर्य तिलक** :- उन्होंने बताया कि सूर्य तिलक परियोजना के तहत हर साल चौत्र माह में श्री रामनवमी पर दोपहर 12 बजे से भगवान राम के मस्तक पर सूर्य की रोशनी से तिलक किया जाएगा और हर साल इस दिन आकाश पर सूर्य की स्थिति बदलती है। उन्होंने कहा कि विस्तृत गणना से पता चलता है कि रामनवमी की तिथि हर 19 साल में दोहराई जाती है। वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर)-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई), रुड़की के एक वरिष्ठ वैज्ञानिक के अनुसार, नियोजित तिलक का आकार 58 मिमी है। उन्होंने बताया कि रामलला के मस्तक के केंद्र पर तिलक लगाने की सही अवधि लगभग तीन से साढ़े तीन मिनट है, जिसमें दो मिनट पूर्ण रोशनी होती है।

☞ **150 एलईडी पर उत्सव का प्रसारण** :- इस बीच, श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के सदस्य अनिल मिश्रा ने कहा कि सूर्य तिलक के दौरान, भक्तों को राम मंदिर के अंदर जाने की अनुमति दी जाएगी। इसके लिए मंदिर ट्रस्ट द्वारा लगभग 100 एलईडी और सरकार द्वारा 50 एलईडी लगाई जा रही हैं। जो रामनवमी समारोह को दिखाएगा, लोग जहां मौजूद हैं वहां से उत्सव देख सकेंगे। इस अद्वितीय तंत्र को स्थापित करने में अपने व्यक्तिगत अनुभव को साझा करते हुए, सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की के मुख्य वैज्ञानिक डॉ डीपी कानूनगो ने कहा कि वास्तव में यह अत्यंत सटीकता प्राप्त करने के लिए सावधानीपूर्वक योजनाबद्ध, डिजाइन और कार्यान्वित किया गया है। उन्होंने कहा कि यह हमारे देशवासियों के सामने प्रदर्शित करने के लिए हमारे वैज्ञानिक कौशल और स्वदेशी तकनीकी विकास का एक प्रमाण होगा, जिन्हें हमारे वैज्ञानिक

समुदाय पर पूरा भरोसा है और उनका समर्थन है।

☞ **अगर बादल जाए तो... :-** यह पूछे जाने पर कि आकाश में बादल छाए रहने की स्थिति में सूर्य तिलक का क्या होगा, कानूनगो ने कहा कि यही सीमा है। हम अपने लोगों की आस्था और विश्वास के कारण कृत्रिम रोशनी के साथ ऐसा नहीं करना चाहते हैं।

☞ **इस तरह पहुंचेगी सूर्य की रोशनी :-** सीएसआईआर केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान, रुड़की की टीम ने भारतीय खगोल भौतिकी संस्थान, बैंगलोर के परामर्श से मंदिर की तीसरी मंजिल से गर्भगृह तक सूर्य के प्रकाश को पहुंचाने के लिए एक तंत्र विकसित किया है। गर्भगृह में सूर्य की रोशनी लाने के लिए विस्तृत संपूर्ण डिजाइन सीबीआरआई द्वारा विकसित किया गया है, जिसमें आईआईए ऑप्टिकल डिजाइन के लिए अपना परामर्श प्रदान किया है। सूर्य तिलक के लिए राम मंदिर में ऑप्टो-मैकेनिकल प्रणाली लागू करने से पहले, रुड़की इलाके के लिए उपयुक्त एक छोटा मॉडल सफलतापूर्वक मान्य किया गया है। मार्च 2024 में बेंगलुरु में ऑप्टिका साइट पर एक पूर्ण पैमाने के मॉडल को सफलतापूर्वक मान्य किया गया है। पाणिग्रही ने कहा कि सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की टीम ने आईआईए बैंगलोर और ऑप्टिका बैंगलोर के साथ मिलकर अप्रैल के पहले सप्ताह में इंस्टॉलेशन

पूरा कर लिया है और बार-बार परीक्षण किए गए हैं। इस बीच, सूर्य तिलक के लिए ऑप्टो-मैकेनिकल सिस्टम के बारे में बताते हुए, पाणिग्रही ने कहा कि ऑप्टो-मैकेनिकल सिस्टम में चार दर्पण और चार लेंस होते हैं जो झुकाव तंत्र और पाइपिंग सिस्टम के अंदर फिट होते हैं। उन्होंने कहा कि दर्पण और लेंस के माध्यम से सूर्य की किरणों को गर्भगृह की ओर मोड़ने के लिए झुकाव तंत्र के लिए एपर्चर के साथ पूरा कवर शीर्ष मंजिल पर रखा गया है। अंतिम लेंस और दर्पण सूर्य की किरण को पूर्व की ओर मुख किए हुए श्रीराम के माथे पर केंद्रित करते हैं। उन्होंने कहा कि कि झुकाव तंत्र का उपयोग प्रत्येक वर्ष श्रीराम नवमी पर सूर्य तिलक बनाने के लिए सूर्य की किरणों को उत्तर दिशा की ओर भेजने के लिए पहले दर्पण के झुकाव को समायोजित करने के लिए किया जाता है। पाणिग्रही के मुताबिक सभी पाइपिंग और अन्य हिस्से पीतल सामग्री का उपयोग करके निर्मित किए जाते हैं। जिन दर्पणों और लेंसों का उपयोग किया जाता है वे बहुत उच्च गुणवत्ता वाले होते हैं और लंबे समय तक चलने के लिए टिकाऊ होते हैं। पाणिग्रही ने कहा कि सूरज की रोशनी के बिखरने से बचने के लिए पाइपों, कोहनियों और बाड़ों की भीतरी सतह पर काले पाउडर का लेप लगाया गया है। इसके अलावा, शीर्ष एपर्चर पर, आईआर (इन्फ्रा रेड) फिल्टर ग्लास का उपयोग सूर्य की गर्मी की लहर को मूर्ति के मस्तक पर पड़ने से रोकने के लिए किया जाता है।

अभी कलम उठाइये

आपके सामने हो रहे भ्रष्टाचार एवं अपराध की खबर की समीक्षा करें और सरकार सहित पुलिस-प्रशासन तक उसको पहुंचाने के लिए केवल सच पत्रिका के साथ जुड़े। खबर की जानकारी इस नम्बर पर दें

सम्पर्क करें:- 9431073769/9955077308

ई-मेल:- editor.kstimes@rediffmail.com पर भेजें।

NHRC shuts noted Kashmiri Pandit killing case, directs J&K govt to deal 'humanely'

The National Human Rights Commission (NHRC) has directed Jammu and Kashmir chief secretary to examine with "humane approach" a case related to the killing of a noted Kashmiri Pandit and his son in 1990.

The NHRC on April 18, asked the J&K chief secretary to take action in the matter as 'deemed appropriate'.

Sarwanand Koul Premi, a well-known Kashmiri Pandit writer and poet was killed along with his son by militants in April 1990. Sarwanand Premi's literary contribution was recognized by J&K government in 2021 and he was conferred with lifetime achievement award posthumously. Rajinder Premi, his son, had moved a complaint in NHRC in 2020 alleging apathy to the plight of terrorism-affected family by the government by delaying the implementation of recommendations of erstwhile J&K State Human Rights Commission (SHRC). The Commission while closing the case said it has considered the matter on record including various submissions of the complainant.

"The State cannot deny the fact that there is considerable delay in toto implementation of decision dated 22.2.2012 of the DB (division bench) of J&K SHRC. The Commission further observes that the family of complainant is sufferer on account of failure on part of State Administration/ Law enforcement agencies to protect the life and property of his family," the NHRC observed. The NHRC said that late Sarwanand Koul was a well known freedom fighter in addition to being a renowned philanthropist, Gandhian, broadcaster, social reformer, litterateur and translator with the knowledge of Hindi, Urdu, Kashmiri, Persian, English and Sanskrit. "Being an eminent scholar, he firmly believed in the national integrity amongst all communities. During the Quit India Movement from 1942-1946, he also worked underground for the cause of nation and got arrested on six occasions during this time-period.

"Late Shri Sarwanand Koul Premi was respected by all communities in the State. Denying the legitimate rights to NoK (next of kin) of such victims shows lack of sensitivity and compassion on part of State Administration towards such innocent persons whose right to life guaranteed under Article 21 of the Constitution of India was violated for just being a persons from one religious community and failure on part of State machinery to prevent such incidents," the NHRC observed. The Commission directed the Chief Secretary, Union Territoty of Jammu and Kashmir to examine the whole issue with a humane approach and take an action as deemed appropriate in the matter."The Commission also directs its Registry to transmit submission dated 15.4.2024 of the complainant along with instant direction. With this observation/direction, instant case stands closed," the NHRC said. While closing the case, the NHRC directed the chief secretary to take further necessary action at your end as per the directions of the Commission.

महिला अधिकारों की खिल्ली उड़ाती कॉर्पोरेट संस्कृति

वर्कप्लेस में महिलाओं को सेनेटरी पैड तक नहीं मिल रहे

Menstrual Cycle (पीरियड) एक ऐसा मुद्दा है, जिसकी भारत में आज खुलकर बात तो होती है, लेकिन यह मुद्दा सिर्फ बातों में ही रह गया। एक महिला की माहवारी (Menstrual Cycle) के 'उन चार दिनों' में बेहद जरूरी सेनेटरी पैड का क्या महत्व होता है यह सिर्फ एक महिला ही समझ सकती है, स्वर्णिम भारत के सपने को साकार करने में कंधे से कंधा मिलाकर जुटी शनारी शक्र्यतिश को अक्सर सेनेटरी पैड की कमी या अन-उपलब्धता से जूझना पड़ रहा है। Center for Monitoring the Indian Economy (CMIE) की रिपोर्ट के अनुसार भारत में 39 मिलियन से भी ज्यादा महिलाएं वर्कफोर्स में काम करती हैं या जॉब सर्च कर रही हैं। इतनी संख्या होने के बाद भी कई महिलाओं को उनके ऑफिस, वर्कप्लेस में या पब्लिक प्लेसेस में सैनिटरी पैड जैसी जरूरी सुविधाएं नहीं मिल रही हैं। जब इस कम चर्चित लेकिन बेहद जरूरी मुद्दे पर हमने पड़ताल शुरू की तो कई चौंकाने वाले तथ्य सामने आए। इंदौर के 20 ऑफिसों में पड़ताल की गई तो इनमें से सिर्फ 8 में ही सेनेटरी पैड की सुविधा देखने को मिली। हमने एक बानगी के लिए सिर्फ 20 कार्यालयों में ही यह पड़ताल की, ऐसे में अंदाजा लगाया जा सकता है कि तेजी से कॉर्पोरेट कल्चर की तरफ बढ़ते

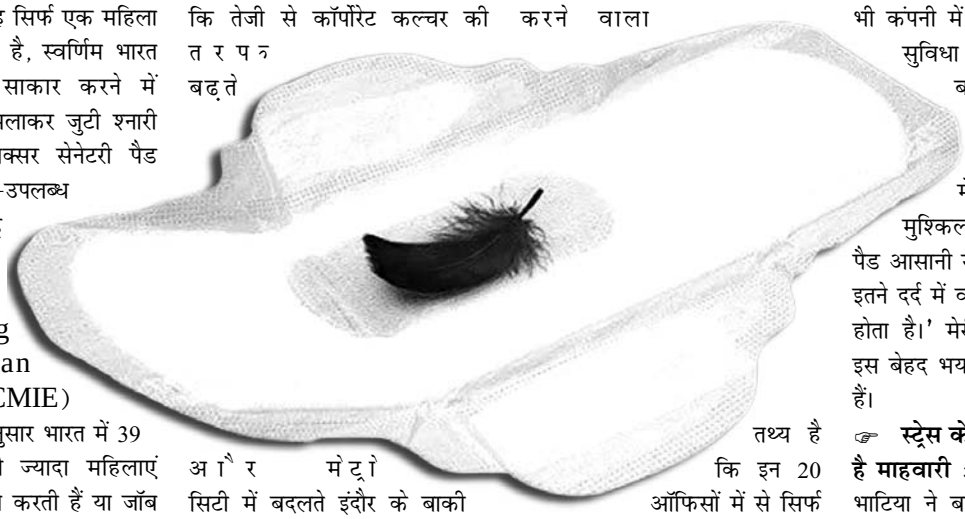

और मेट्रो सिटी में बदलते इंदौर के बाकी हजारों ऑफिसों में सेनेटरी पैड को लेकर क्या आलम होगा। इतना ही नहीं, दिल्ली, अहमदाबाद, मुंबई से लेकर भोपाल जैसे तमाम शहरों में इस सुविधा को लेकर पड़ताल की तो हैरान करने वाली सचाई सामने आई। इन शहरों में भी महिलाओं के उन दिनों की इस तकलीफ को महसूस करने के लिए कोई नहीं था। हैरान करने वाली सचाई है कि 'महिलाओं के मन की बात' कोई क्यों नहीं करता है।

☞ **बड़े-बड़े कॉर्पोरेट ऑफिसों में नहीं सैनिटरी सुविधा :-** हैरान करने वाला तथ्य है कि इन 20 ऑफिसों में से सिर्फ 8 में ही महिलाओं और वर्किंग वुमन के लिए सैनिटरी पैड या उसकी वेंडिंग मशीन की सुविधा उपलब्ध थी। दिलचस्प है कि इनमें से सिर्फ 6 ऑफिस ही ऐसे हैं, जिनमें वेंडिंग मशीन ठीक से काम कर रही हैं। बाकी जगहों पर मशीनें कबाड़ हो चुकी हैं या तो हैं ही नहीं।

☞ **पीरियड के दर्द के कारण मेडिकल शॉप जाना मुश्किल :-** एक मल्टीनेशनल कंपनी में काम करने वाली नंदिनी करोसिया ने हमें बताया-'मैं इंदौर में 3 कंपनियों में काम कर चुकी हूं जिसमें से एक भी कंपनी में मुझे सैनिटरी पैड की सुविधा नहीं मिली है। एक बार मुझे ऑफिस में पीरियड आए थे और दर्द के कारण मैं मेडिकल शॉप भी बहुत मुश्किल से गई। मेडिकल पर पैड आसानी से मिल जाते हैं लेकिन इतने दर्द में वहां तक जाना मुश्किल होता है।' मेरी जैसी कई महिलाएं इस बेहद भयावह स्थिति से गुजरती हैं।

☞ **स्ट्रेस के कारण अंसर्टन होती है माहवारी :-** वर्किंग वुमन ज्योति भाटिया ने बताया कि 'ऑफिस में काम का बहुत ज्यादा स्ट्रेस होता है। इस स्ट्रेस के कारण पीरियड की डेट भी अनियमित होती है और कभी भी आ जाती हैं। ऐसे में हर बार पीरियड के लिए तैयार रहना

नंदिनी करोसिया
(वर्किंग वुमन)

अंजलि अग्रवाल
(भारतीय ग्रामीण महिला संघ की डायरेक्टर)

दृष्टि राठौर
(वर्किंग वुमन)

मुश्किल है। साथ ही दर्द और कमजोरी के कारण किसी मेडिकल स्टोर से पैड लाना भी मुश्किल होता है। हालांकि कई निजी ऑफिस में तो फिर भी सैनिटरी पैड उपलब्ध रहते हैं लेकिन सरकारी ऑफिस में महिलाओं के लिए इस बेहद जरूरी सुविधा और हाइजीन की व्यवस्था बहुत खराब हालत में है।'

☞ **दोस्तों से मांगना पडता है सम्मान के लिए सामान :-** बहुत हैरान करने वाला सच है कि यह पीड़ा किसी एक दो या तीन महिलाओं की नहीं है, बल्कि हर दूसरी लड़की और महिला इस भयावह सच से गुजर रही है। नवनी गंधे की भी यही कहानी है। नवनी ने हमें बताया कि 'मेरे ऑफिस में पैड न होने के कारण मुझे परेशान होना पड़ा। ऐसे में ऑफिस का सारा काम छोड़कर मैंने अपने दोस्तों से सैनिटरी पैड के लिए पूछा, फिर एक दोस्त ने मुझे सैनिटरी पैड दिया।' यह मेरे लिए बहुत शर्मिंदा होने वाली बात थी, हालांकि एक महिला होने के नाते मेरी साथी ने मेरे दर्द को महसूस किया। दर्शना मौर्या ने बताया कि मैं मीडिया कपंनी में काम करती हूं और तमाम लोगों की आवाज उठाती हूं। अब तक इंदौर की दो मीडिया कंपनियों में काम कर चुकी हूं, लेकिन वहां सैनिटरी पैड की कोई सुविधा नहीं थी। ऐसे हालातों से बचने के लिए मैं हमेशा अपने साथ सैनिटरी पैड लेकर चलती हूं।'

☞ **चिल्लर की चिक-चिक :-** दृष्टि राठौर ने कहा कि 'मेरे ऑफिस में सैनिटरी पैड की मशीन तो है लेकिन मशीन से पैड एक्सेस करने के लिए 5 रुपए का सिक्का डालना होता है, इन दिनों पांच रुपए का सिक्का कहां मिलता है, ऐसे में सुविधा होते हुए भी उसका फायदा नहीं मिल पाता है। पीरियड वाली स्थिति में हमें 5 का सिक्का ढूंढना बहुत मुश्किल है। दुखद तो यह है कि कई बार मशीन में पैड भी नहीं होते हैं। इसलिए लिए डिजिटल मशीन या ऑनलाइन पेमेंट के लिए QR Code का इस्तेमाल करना चाहिए। मुस्कान बंधी ने कहा कि 'मेरे ऑफिस में सैनिटरी पैड मौजूद होते हैं और अगर आपके ऑफिस में महिलाएं काम कर रही हैं तो यह जरूरी सुविधा है जो हर ऑफिस वालों को देना चाहिए।'

☞ **मुंबई और अहमदाबाद की MNC में आसानी से मिलते हैं सैनिटरी पैड :-** मुंबई, अहमदाबाद, भोपाल जैसे शहरों में कई MNC कंपनियां यह सुविधाएं मुहैया करवाती हैं। वहां काम करने वाल वर्किंग वुमेन यशी श्रीवास्तव और नाज प्रवीण ने बताया कि उनकी कंपनी में सैनिटरी पैड की मशीन उपलब्ध रहती हैं। लेकिन इंदौर में आज भी कई ऑफिस में इसकी सुविधा नहीं दी जा रही है।

☞ **सरकारी स्कूल और हॉस्टल में फ्री तो प्राइवेट कंपनी में क्यों नहीं? :-** भारतीय ग्रामीण महिला संघ की डायरेक्टर अंजलि अग्रवाल ने कहा कि भारत में इसके लिए कोई नियम नहीं है और न ही यह किसी ऑफिस के लिए जरूरी है। लेकिन अगर

ऑफिस में महिलाएं काम कर रही हैं तो इसके लिए उन्हें जागरूक होना जरूरी है। हम सरकारी स्कूल और हॉस्टल में फ्री में सैनिटरी पैड देते हैं। साथ ही स्कूल और कॉलेज में वेंडिंग मशीन भी होती है। प्राइवेट ऑफिस में भी महिलाओं के लिए यह सुविधा होनी चाहिए।

☞ **सैनिटरी प्रोडक्ट के लिए हर महिला की चॉइस अलग है :-** विभावरी, समाजसेवी संस्था की कार्यकर्ता, सोनल शर्मा ने बताया कि ऑफिस में अक्सर महिलाएं अपना पैड ही लेकर चलती हैं। मुझे नहीं लगता है कि ऑफिस में सैनिटरी पैड होना जरूरी है। ऐसा इसलिए क्योंकि हर महिला को अलग-अलग सैनिटरी पैड की जरूरत है। ऐसे में यह हमारी जिम्मेदारी है कि हम अपने साथ हमेशा सैनिटरी पैड रखें।

☞ **दुनिया का पहला देश जहां सैनिटरी प्रोडक्ट फ्री :-** स्कॉटलैंड दुनिया का पहला ऐसा देश है जहां सैनिटरी प्रोडक्ट फ्री में दिए जाते हैं। 2018 में स्कॉटलैंड ने इस विषय पर सर्वे कंडक्ट किया जिसमें सामने आया कि 4 में से 1 महिला सैनिटरी प्रोडक्ट के लिए परेशान होती है। साथ ही 64 प्रतिशत लड़कियां पीरियड के कारण स्कूल नहीं जाती हैं। इस कारण से स्कॉटलैंड ने 2020 में फ्री पीरियड प्रोडक्ट्स बिल पास किया। इसके अलावा न्यू जीलैंड, विक्टोरिया, न्यू यॉर्क जैसे 20 देश फ्री सैनिटरी प्रोडक्ट देते हैं।

☞ **देश के सबसे स्वच्छ शहर में क्यों नहीं अवेयरनेस :-** इंदौर देश का सबसे स्वच्छ शहर है, लेकिन न सिर्फ इंदौर बल्कि देश के कई शहरों में पीरियड को लेकर जागरूकता अभी भी कम है। ऐसे में ग्रामीण एरिया या छोटे शहरों में काम करने वाली महिलाएं वर्कप्लेस पर ज्यादा स्ट्रगल करती हैं। इसके लिए कोई नियम होना जरूरी नहीं है। आपके फीमेल एम्प्लोयी के लिए ऑफिस में फ्री सैनिटरी पैड होना चाहिए जो इमरजेंसी के समय काम आ सके। सबसे बड़ा सवाल है कि क्या महिला अधिकारों का सिर्फ दिखावा है? अधिकांश वर्कप्लेस में महिलाओं को बुनियादी सुविधाएं तक नहीं मिल रही है। Menstrual Cycle पर महिलाओं के मन की बात आखिर कब कोई करेगा।

Exploring Global Markets Through Online Platforms

Have you ever thought about how financial markets function and how you can get involved, regardless of your investment size or finance knowledge? Today's technology-driven world has opened doors to global markets through online forex and CFD trading platforms. This means you can utilize the cm trading affiliate login to access trading opportunities for currencies, stocks or commodities like oil and gold, all from the comfort of your home.

Basics of Forex and CFD Trading

Online trading is centered around Forex (currency trading) and CFDs (Contracts for Difference), which enable you to speculate on the price movements of various assets. For instance, if you anticipate a rise in gold prices, you can take a position on that guess. If your prediction is correct, your profit reflects the price increase. This market operates around the clock, offering you the flexibility to trade on your own time. At its core, forex trading involves simultaneously buying one currency while selling another, to profit from the fluctuating exchange rates between the two. CFD trading, on the other hand, allows you to speculate on price movements without owning the underlying asset. This means you can potentially benefit from both rising and falling markets. Both forex and CFD trading involve leverage, which can amplify your gains but also your losses, so it's crucial to have a solid understanding of risk management.

Features of Effective Trading Platforms

The best trading platforms stand out with their user-friendly interfaces, detailed trading tools, and valuable resources such as live charts and educational tutorials. They also provide demo accounts, perfect

for beginners to practice without risk. Additionally, many platforms have affiliate features that allow you to collaborate and earn benefits through referrals, adding an extra layer of opportunity for experienced traders.

In addition to these core features, top trading platforms often provide mobile apps for trading on the go, as well as integration with popular payment systems for smooth deposits and withdrawals. Many platforms also offer social trading features, where you can follow and even automatically copy the trades of successful investors. This can be a great way for beginners to learn from more experienced traders and potentially benefit from their strategies.

Benefits of Real-Time Trading

Engaging in real-time trading puts you at the forefront of global financial movements. Market prices for currencies, stocks, and commodities are influenced by a myriad of factors including global politics and economic indicators. With real-time data, you can make rapid decisions based on these events. For example, if a country reports higher economic growth than expected, its currency might strengthen, giving you a chance to act on this information immediately. Real-time trading also gives you the ability to employ various trading strategies that capitalize on short-term price movements. For example, you might use a scalping strategy, which involves making many quick trades with small profits, or a news-based strategy, where you trade based on the immediate impact of economic or political news releases. The speed and flexibility of real-time trading open up a wide range of strategic possibilities.

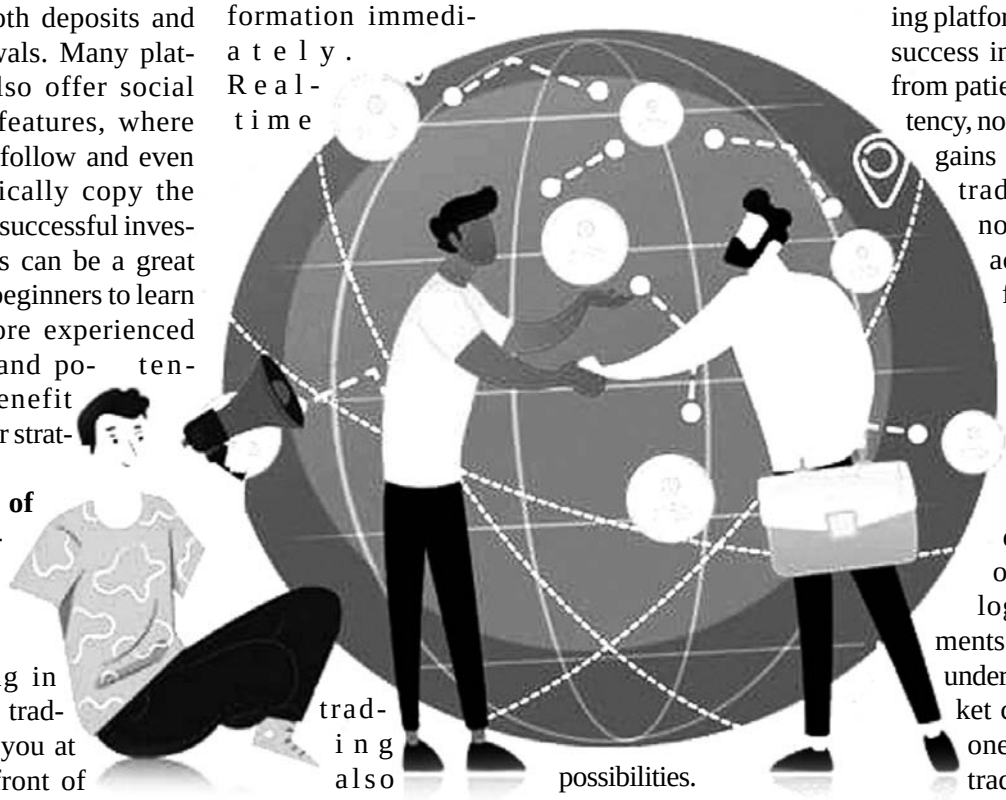

Tips for Trading Beginners

Entering online trading can be intimidating, but it can be navigated effectively with the right approach. It's wise to start with small investments and expand as you gain understanding and confidence. Continuous education about market dynamics and trading strategies is critical. Make the most of the support and learning resources offered by trading platforms. Remember, success in trading comes from patience and consistency, not just making big gains quickly. Online trading platforms not only provide access to global financial markets; they are powerful instruments for making informed, strategic investment decisions. With ongoing technological advancements and a growing understanding of market conditions, anyone can engage in trading and pursue potential financial success.

सलमान के घर के बाहर फायरिंग

बॉलीवुड सुपरस्टार सलमान खान के घर के बाहर 14 अप्रैल की सुबह गोली चलने से हड़कंप मच गया। पुलिस ने इलाके की सुरक्षा बढ़ा दी है। सलमान खान को पहले भी कई बार जान से मारने की धमकी मिल चुकी है। बताया जा रहा है कि सुबह 4.55 बजे बाइक से आए 2 बदमाशों ने बांद्रा इलाके में स्थित 'गैलेक्सी अपार्टमेंट्स' के बाहर गोलियां चलाई। 4 राउंड फायरिंग के बाद बदमाश फरार हो गए। इसी इमारत में अभिनेता रहते हैं। गोलीबारी के वक्त सलमान घर पर ही थे। पुलिस मामले की जांच कर रही है। फॉरेंसिक विज्ञान विशेषज्ञों की एक टीम भी मौके पर पहुंच गई है। सलमान को वाई प्लस सुरक्षा प्राप्त है। उल्लेखनीय है कि कुख्यात गैंगस्टर लॉरेंस बिश्नोई कई बार सलमान खान को जान से मारने की धमकी दे चुका है। पिछले वर्ष मार्च में अभिनेता के दफ्तर को एक ई-मेल भेजकर खान को धमकी दी गई थी। इसके बाद मुंबई पुलिस ने गैंगस्टर लॉरेंस बिश्नोई और गोल्डी बराड़ के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की थी। वही सलमान

खान के घर के सामने फायरिंग करने के मामले में कुछ नए खुलासे हुए हैं। पूछताछ में सामने आया है कि आरोपियों का गोली चलाने के पीछे सिर्फ सलमान को डराना था। बता दें कि बॉलीवुड अभिनेता सलमान खान के घर गैलेक्सी अपार्टमेंट के बाहर फायरिंग मामले में हरियाणा से एक आरोपी को हिरासत में लिया गया है। जानकारी सामने आई है कि संदिग्ध का संबंध गिरफ्तार किए गए दो आरोपियों में से एक से है और वह घटना से पहले और बाद में लगातार संपर्क में था। उन्होंने कहा कि हिरासत में लिए गए व्यक्ति पर जेल में बंद गैंगस्टर लॉरेंस बिश्नोई के छोटे भाई अनमोल बिश्नोई से निर्देश लेने का संदेह है। पुलिस सूत्रों का यह भी कहना है कि इस फायरिंग की घटना को अंजाम देने के लिए शूटरों को 4 लाख रुपए की पेशकश की गई थी।

गौरतलब है कि बांद्रा इलाके में सलमान खान के आवास पर गोलीबारी करने के आरोप में गिरफ्तार सागर पाल और विक्की गुप्ता हिरासत में लिए गए संदिग्ध को अपनी गतिविधियों के बारे में विस्तृत जानकारी दे रहे थे और फोन इंटरनेट के माध्यम से किया गया था। उन्होंने कहा कि घटना के बाद सागर पाल और विक्की गुप्ता मुंबई से भागकर भुज की ओर चले गए और सूरत के पास उन्होंने उस मोबाइल फोन का

सिम कार्ड बदल दिया, जिसका उपयोग वे बातचीत के लिए कर रहे थे। पुलिस के मुताबिक तकनीकी निगरानी के दौरान संज्ञान में आया कि पुलिस को भ्रमित करने के लिए वे बार-बार मोबाइल फोन बंद कर देते थे। लेकिन जिस नंबर पर उन्होंने फोन किया वह हमेशा एक ही था। संदिग्ध को हरियाणा में पकड़े जाने के बाद मुंबई लाया गया। उन्होंने कहा कि उससे पूछताछ की जा रही है लेकिन मामले में उसे अभी गिरफ्तार नहीं किया गया है। सागर पाल और उसके साथी विक्की गुप्ता दोनों को कथित तौर पर शूटिंग को अंजाम देने के लिए 4 लाख की पेशकश की गई थी, जिसमें 1 लाख का एडवांस दे दिया गया था। पुलिस ने दावा किया कि दोनों को काम पूरा होने के बाद और बाकी बचे पैसे देने का वादा किया गया था। मुंबई क्राइम ब्रांच के अधिकारियों ने बताया कि इसका उद्देश्य सलमान खान की हत्या करना नहीं बल्कि उन्हें डराना था। मुम्बई क्राइम ब्रांच के मुताबिक अनमोल बिश्नोई का मकसद शूटरों से फायरिंग कराकर सिर्फ डर पैदा करना था, सलमान को मारने का इरादा नहीं था। इस मामले में क्राइम ब्रांच ने दोनों शूटरों के परिवार का बयान भी दर्ज किया है। क्राइम ब्रांच गवाह के तौर पर सलमान खान का बयान दर्ज करेगी। वही सलमान खान के घर के बाहर फायरिंग करने वाले मामले में विशाल राहुल उर्फ कालू का नाम सामने आया है। कालू गुरुग्राम का रहने वाला है। वो 10वीं तक पढ़ा है और उसके खिलाफ 5 से ज्यादा आपराधिक मामले दर्ज हैं। बताया जाता है कि वो राजस्थान के गैंगस्टर रोहित गोदारा का शूटर है। बता दें कि कुछ दिनों पहले विशाल ने हरियाणा के रोहतक में लॉरेंश बिश्नोई के इशारे पर एक बुकी का कत्ल किया था। सीसीटीवी में रिकॉर्ड हुई वारदात में वह गोली चलाता

दिखाई दिया था। विशाल, राजस्थान के कुख्यात गैंगस्टर रोहित गोदारा का शूटर है। रोहित गोदारा, लारेंस बिश्नोई गैंग से जुड़ा है। सलमान खान के घर से जुड़े मामले का तार हरियाणा से शूटरों के जुड़ने के बाद हरियाणा पुलिस भी एक्टिव हुई है। दूसरी तरफ मुंबई पुलिस ने गोलीबारी करने के मामले में FIR दर्ज की है। पुलिस ने बताया कि अभिनेता के घर से करीब एक किलोमीटर दूर एक मोटरसाइकिल बरामद की है और ऐसा संदेह है कि हमलावरों ने इसका इस्तेमाल किया था। बांद्रा पुलिस के अधिकारी के अनुसार, भारतीय दंड संहिता की धारा 307 (हत्या का प्रयास) और शस्त्र अधिनियम के तहत अज्ञात व्यक्ति के खिलाफ एफआईआर दर्ज की गई है।

बता दें कि दिल्ली पुलिस को संदेह है कि इनमें से एक आरोपी गुरुग्राम से है, जो हरियाणा में हत्या और डकैती की कई घटनाओं में शामिल रहा है। वो गुरुग्राम स्थित व्यवसायी सचिन मुंजाल की हत्या

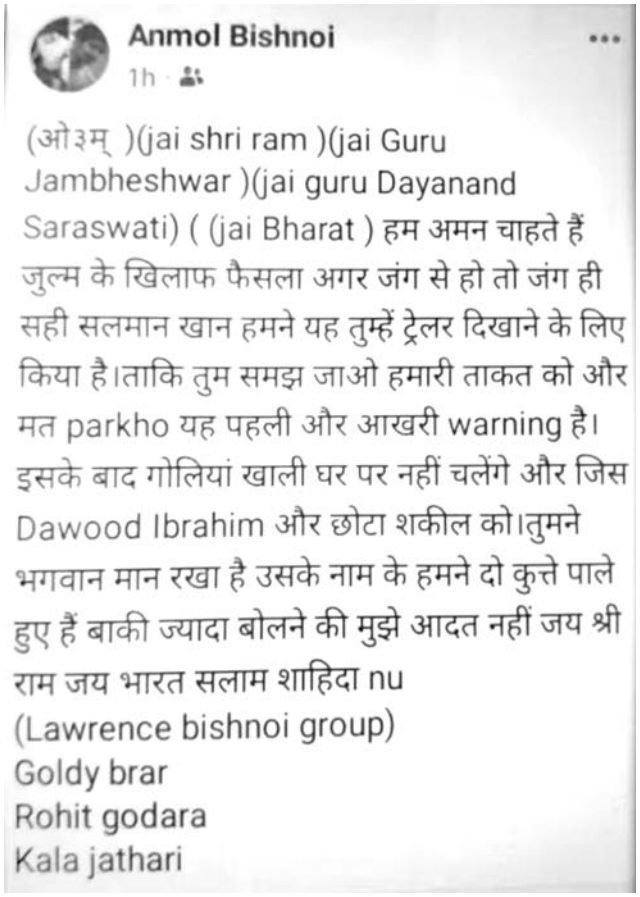

के मामले में वांछित है। वही विदेश में रहने वाले गैंगस्टर रोहित गोदारा ने एक कथित सोशल मीडिया पोस्ट के जरिए मुंजाल की हत्या की जिम्मेदारी ली थी। वह गैंगस्टर लॉरेंस बिश्नोई, उसके भाई अनमोल और गोल्डी बराड़ का करीबी सहयोगी है। पुलिस के मुताबिक सलमान खान के घर के बाहर गोलीबारी के कुछ घंटों बाद अनमोल बिश्नोई ने एक कथित ऑनलाइन पोस्ट के जरिए घटना की जिम्मेदारी ली और बॉलीवुड अभिनेता को चेतावनी जारी करते हुए कहा कि यह एक 'ट्रेलर' था। पिछले वर्ष मार्च में अभिनेता के दफ्तर को एक ई-मेल भेजकर खान को धमकी दी गई थी, जिसके बाद मुंबई पुलिस ने गैंगस्टर लॉरेंस बिश्नोई, गोल्डी बराड़ और एक अन्य के खिलाफ भारतीय दंड संहिता की धारा 120-बी (आपराधिक षड्यंत्र) समेत अन्य धाराओं में एक एफआईर दर्ज की थी। एफआईआर प्रशांत गुंजालकर द्वारा बांद्रा पुलिस को दी गई एक शिकायत के आधार पर दर्ज की गई। पुलिस के अनुसार, गुंजालकर अक्सर खान के बांद्रा स्थित आवास पर जाते हैं और एक कलाकार प्रबंधन कंपनी चलाते हैं। पुलिस ने पहले बताया था कि ई-मेल में कहा गया था कि खान ने लॉरेंस बिश्नोई द्वारा एक समाचार चैनल को दिया गया इंटरव्यू देखा होगा और अगर नहीं देखा है तो उन्हें वह देखना चाहिए। ई-मेल में गुंजालकर से कहा गया था कि अगर खान इस मामले को बंद करना चाहते हैं, तो उन्हें गोल्डी भाई से आमने-सामने बात करनी चाहिए। पुलिस के मुताबिक, उसमें कहा गया था, 'अभी भी समय है, लेकिन अगली बार, झटका देखने को मिलेगा।' पुलिस ने बताया था कि जून 2022 में एक अज्ञात व्यक्ति ने एक हस्तलिखित पत्र के जरिए खान को धमकी दी थी।

फार्म IV (नियम 8 देखें)

01. प्रकाशन का स्थान	:-	पटना
02. प्रकाशन की आवर्तिता	:-	मासिक
03. मुद्रक का नाम	:-	ब्रजेश मिश्र
क्या भारतीय नागरिक हैं?	:-	हां
(अगर विदेशी हों, तो मूल देश का नाम)	:-	लागू नहीं
पता	:-	पूर्वी अशोक नगर रोड नं-14, कंकड़बाग पटना-800020 (बिहार)
04. प्रकाशक का नाम	:-	ब्रजेश मिश्र
क्या भारतीय नागरिक हैं?	:-	हां
(अगर विदेशी हों, तो मूल देश का नाम)	:-	लागू नहीं
पता	:-	पूर्वी अशोक नगर रोड नं- 14, कंकड़बाग पटना-800020 (बिहार)
05. संपादक का नाम	:-	ब्रजेश मिश्र
क्या भारतीय नागरिक हैं?	:-	हां
(अगर विदेशी हों, तो मूल देश का नाम)	:-	लागू नहीं
पता	:-	पूर्वी अशोक नगर रोड नं- 14, कंकड़बाग पटना-800020 (बिहार)
06. उन लोगों के नाम और पते जो समाचार पत्र के मालिक हों, या जिनके पास कुल पूंजी का एक फीसदी से अधिक हो	:-	मालिक श्रुति कम्युनिकेशन ट्रस्ट पूर्वी अशोक नगर रोड नं- 14, कंकड़बाग पटना-800020 (बिहार)
07. कुल पूंजी में एक फीसदी से अधिक की हिस्सेदारी रखने वाली शेयरधारकों के नाम और पते	:-	मालिक श्रुति कम्युनिकेशन ट्रस्ट पूर्वी अशोक नगर रोड नं- 14, कंकड़बाग पटना-800020 (बिहार)

मैं ब्रजेश मिश्र घोषणा करता हूं कि ऊपर दिया गया ब्योरा मेरी जानकारी और मान्यता के अनुसार सही है।

हस्ताक्षर (ब्रजेश मिश्र)

दिनांक:- 5 अप्रैल 2024

प्रकाशक का हस्ताक्षर

कानूनी सलाह

शिवानंद गिरि
(अधिवक्ता)
Ph.- 9308454485
7004408851
E-mail :-
shivanandgiri5@gmail.com

✯ जानिए नाराजी याचिका (Protest Petition) क्या होती है और कौन कर सकता है इसे दाखिल?

हम अक्सर ही ऐसे मामले देखते हैं जहां एक व्यक्ति (victim/informant) एक मामले को लेकर एक FIR दर्ज करता है, पुलिस उस मामले में अन्वेषण करती है और उसके पश्च्यात पुलिस द्वारा मामले में क्लोजर रिपोर्ट अदालत में दाखिल कर दी जाती है। गौरतलब है कि यह रिपोर्ट तब दाखिल की जाती है जब पुलिस को अपने अन्वेषण में FIR में अभियुक्त के तौर पर नामजद व्यक्ति/व्यक्तियों के खिलाफ कोई मामला बनता नहीं दिखता है। इसके परिणामस्वरूप कई बार मजिस्ट्रेट द्वारा ऐसे व्यक्ति/ व्यक्तियों को डिस्चार्ज कर दिया जाता है (हालाँकि, मजिस्ट्रेट ऐसा करने के लिए बाध्य नहीं है)। गौरतलब है कि यह रिपोर्ट तब दाखिल की जाती है जब पुलिस को अपने अन्वेषण में FIR में अभियुक्त के तौर पर नामजद व्यक्ति/व्यक्तियों के खिलाफ कोई मामला बनता नहीं दिखता है। इसके परिणामस्वरूप कई बार मजिस्ट्रेट द्वारा ऐसे व्यक्ति / व्यक्तियों को डिस्चार्ज कर दिया जाता है (हालाँकि, मजिस्ट्रेट ऐसा करने के लिए बाध्य नहीं है)। जाहिर सी बात है कि ऐसे मामलों में victim/informant अवश्य ही अभियुक्त के डिस्चार्ज हो जाने से असंतुष्ट होगा। लेकिन क्या हमारा कानून ऐसे व्यक्ति को कोई उपाय देता है जिससे उसके हित को चोट न पहुंचे और अदालत द्वारा उसके मामले को उचित तवज्जो दी जाए? अक्सर यह भी देखा गया है कि जहाँ पुलिस द्वारा एक चार्जशीट दायर की जाती है, उसमे उचित प्रकार से अन्वेषण नहीं किया जाता है, और इसके परिणामस्वरूप यह साफ जाहिर होता है कि मामला कमजोर है और FIR में अभियुक्त के तौर पर नामजद व्यक्ति अंततः डिस्चार्ज/बरी हो जायेगा, और जिसके चलते पीड़ित/अपराध की पुलिस को सूचना देने वाले व्यक्ति को असंतुष्ट होना पड़ेगा। ऐसे मामलों में क्या victim/informant के पास क्या कोई उपाय मौजूद है?

इन सवालों का जवाब हम 'नाराजी याचिका' (Protest Petition) के बारे में जानकार हासिल करेंगे। हम इस लेख के जरिये यह भी समझेंगे कि ऐसे समय में, जहां कई बार पुलिस या अभियोजन पक्ष, पीड़ित के सभी हितों की रक्षा करने में सक्षम नहीं है, वहां नाराजी याचिका जैसे उपायों के बारे में जागरूक होना, औसत नागरिक को वास्तविक न्याय के लिए उसकी तलाश में उसे कैसे सशक्त बनाता है।

✯ क्या होती है नाराजी याचिका और कौन कर सकता है इसे दाखिल?

'प्रोटेस्ट पिटीशन' (नाराजी याचिका) के सम्बन्ध में दंड प्रक्रिया संहिता, 1973, भारतीय दंड संहिता, 1860 या भारतीय साक्ष्य अधिनियम, 1872 या किसी अन्य अधिनियम में कोई प्रावधान नहीं दिया गया है। हम यह कह सकते हैं कि पुलिस द्वारा अन्वेषण पूरा होने के दौरान या बाद में victim/informant द्वारा अदालत में प्रस्तुत किया जाने वाला प्रतिनिधित्व, प्रोटेस्ट पिटीशन (नाराजी याचिका) के रूप में जाना जाता है। गौरतलब है कि जब पुलिस किसी मामले में अपनी रिपोर्ट में इस निष्कर्ष पर आती है कि अन्वेषण के दौरान अभियुक्त (या अभियुक्तों) के खिलाफ आरोप नहीं पाए गए हैं, तब मजिस्ट्रेट द्वारा अंतिम रिपोर्ट को लेकर अपने न्यायिक मत को लागू करने का निर्णय लेने से पहले, नाराजी याचिका के जरिये, victim/informant को इन निष्कर्षों के खिलाफ आपत्तियां उठाने का अवसर दिया जाता है। ऐसा माना जाता है कि ऐसी याचिका को 'नाराजी याचिका' कहने का चलन कलकत्ता हाईकोर्ट से शुरू हुआ जहां कई मामलों में अदालत ने इस शब्द का जिक्र किया। शेकंदर मिया बनाम एम्परर AIR 1933 Cal 614, लक्ष्मी शॉ बनाम एम्परर AIR 1932 Cal 383 एवं चार्ल्स जोन्स बनाम एम्परर AIR 1932 Cal 550 ऐसे मामले हैं जहाँ इस शब्द का इस्तेमाल होते हुए देखा जा सकता है। इन सभी मामलो में उच्च न्यायालय द्वारा प्रोटेस्ट याचिकाओं को पुलिस अन्वेषण का विरोध करने वाले किसी भी अभ्यावेदन के रूप में देखा जाता था। स्वाभाविक रूप से, यह आरोपी व्यक्तियों और परिवादियों/पीड़ितों, दोनों ही पक्षों के द्वारा दायर किया जाता था। जहाँ एक अभियुक्त द्वारा प्रोटेस्ट याचिका केवल जांच के दौरान दायर की जाती थी, वहीं complainant/victim/informant द्वारा यह याचिका पुलिस अन्वेषण के समापन के बाद दायर की जाती थी। आज के समय में, इस तरह की याचिका को आमतौर पर पुलिस द्वारा धारा 173 दंड प्रक्रिया संहिता, 1973 के तहत क्लोजर रिपोर्ट या B-रिपोर्ट (जिसे पहले आम तौर पर अंतिम रिपोर्ट के रूप में समझा जाता था) दर्ज करने के बाद एवं अदालत द्वारा न्यायिक निर्णय लिए जाने से पहले अदालत में दाखिल किया जाता है (आमतौर पर informant/victim द्वारा)। हालांकि, ऐसा कोई प्रावधान नहीं है कि प्रथम सूचना रिपोर्ट (FIR) दर्ज करने वाला व्यक्ति/पीड़ित ही यह नाराजी याचिका दायर करे, परन्तु यह प्रथा रही है कि एक informant/victim द्वारा ही नाराजी याचिका दाखिल की जाती है। इसके अलावा, जैसा कि भगवंत सिंह बनाम informant/victim द्वारा ही नाराजी याचिका दाखिल की जाती है। इसके अलावा, जैसा कि भगवंत सिंह बनाम कमिश्नर ऑफ पुलिस एवं अन्य (1985) 2 SCC 537 के मामले में सुप्रीम कोर्ट द्वारा संकेत दिया गया है, इस याचिका को दाखिल करने का अधिकार मुखबिर (पुलिस को किसी अपराध की इत्तिला देने वाला व्यक्ति, जोकि मामले में पीड़ित भी हो सकता है) को ही दिया गया है और किसी को नहीं। हालाँकि, एक हालिया मामले आर. धरमलिंगम बनाम राज्य (इंस्पेक्टर ऑफ पुलिस दक्षिण कोयम्बटूर) Cr. RC. No.-967 of 2019 में मद्रास हाईकोर्ट ने यह माना है कि जहाँ याचिकाकर्ता/पीड़ित, ऐसे व्यक्ति हैं जिनकी किसी परिवाद में रुचि है और उन्हें उस मामले में दायर अंतिम रिपोर्ट के बारे में सूचित नहीं किया जाता है, तो न्यायालय उस मामले को, मजिस्ट्रेट के सामने अंतिम रिपोर्ट दायर किए जाने का समय/स्तर मानते हुए देखेगी और इसका परिणाम यह होगा कि इस स्तर पर याचिकाकर्ता को नाराजी याचिका दायर करने का अधिकार होगा। सर्वोच्च न्यायालय ने मद्रास उच्च न्यायालय के इस फैसले की पुष्टि इसी महीने (फरवरी 2020) में की जिसमें यह माना गया था कि एक याचिकाकर्ता, एक पीड़ित होने के नाते, पुलिस की अंतिम रिपोर्ट की स्वीकृति से पहले अनिवार्य रूप से नोटिस प्राप्त का हकदार है और यदि ऐसा कोई नोटिस नहीं उसे नहीं दिया गया है, तो उसका अधिकार है कि वह नाराजी याचिका दायर कर सके।

✯ क्या क्लोजर रिपोर्ट दाखिल होने से पहले नाराजी याचिका पर विचार किया जा सकता है?

दिल्ली में वकालत करने वाले अधिवक्ता अभिनव सिकरी का यह मानना है कि क्लोजर रिपोर्ट को स्वीकार करने से पहले प्रोटेस्ट पिटीशन पर विचार करने पर कोई रोक नहीं है। मजिस्ट्रेट, क्लोजर रिपोर्ट से पहले ही नाराजी याचिका को अच्छी तरह से देख सकता है और फिर उसके बाद क्लोजर रिपोर्ट पर खुद ही संज्ञान ले सकता है। इसके अलावा एक विरोध याचिका प्राप्त करने के बाद मजिस्ट्रेट को धारा 156 (3) Cr. P.C. के तहत आगे का अन्वेषण करने के निर्देश देने का भी अधिकार है। इसी तरह, यह भी कई मामलों में तय किया गया है कि अगर मजिस्ट्रेट, प्रोटेस्ट पिटीशन पर संज्ञान लेने का निर्णय लेता है, तो उसे सीआरपीसी की धारा 2 (डी) के तहत एक 'परिवाद' (Complaint) के अवयवों को संतुष्ट करना होगा और फिर शिकायतकर्ता का ओथ पर परिक्षण करना होगा इससे पहले कि अभियुक्तों को समन जारी किया जा सके।

GSTIN : 10KEPD0123PIZP

उत्तर भारत का COOKIE MAKER, सीवान में पहली बार
आपके लिए लेकर आया है

Cookie का बेहतर श्रृंखला

PRATIK ENTERPRISES

राजपुर (रघुनाथपुर) में अत्याधुनिक मशीनों द्वारा रस्क, बिस्कुट, बर्गर, मीठा ब्रेड, वंद, क्रीम रोल, पेटीज और बर्ड डे केक, पार्टी केक ग्राहकों के मनपसंद तैयार किया जाता है।

शुद्धता एवं स्वाद की 100% गारंटी

किसी भी अवसर पर
एक बार सेवा का मौका अवश्य दें।

प्रतीक फुड कंपनी

प्रतीक इंटरप्राइजेज, प्रतीक पतंजलि
राजपुर, रघुनाथपुर, सीवान (बिहार)

-: सौजन्य से :-

ब्रजेश कुमार दुबे

Mob.-9065583882, 9801380138

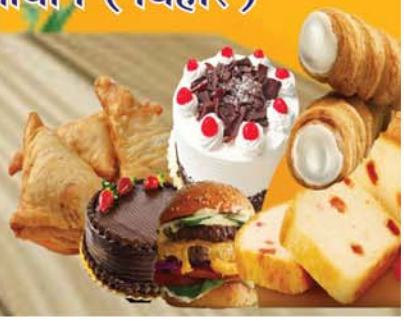

WESTERLIN DRUGS PVT. LTD.

(Serving nation since 1990)

WESTOCITRON
WESTOCLAV
WESTOFERON
WESTOPLEX
QNEMIC

AOJ
AZIWEST
DAULER
MUCULENT
AOJ-D
BESTARYL-M
GAS-40
MUCULENT-D

SEVIPROT
WESTOMOL
WESTO ENZYME
ZEBRIL

WESTERLIN DRUGS PVT. LTD.
WD
Dispersing Happiness

WESTERLIN DRUGS PVT. LTD.
Industrial area, Fatuha-803201
E-mail- westerlindrugsprivatelimited@gmail.com
Phone No.:0162-3500233/2950008